संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

मार्च-अप्रैल 2016

झलकियाँ

अंतरराष्ट्रीय महिला-दिवस समारोह

•

साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस

•

राज्य अकादेमियों एवं राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक

•

संगोष्ठी

•

लेखक सम्मिलन

•

परिसंवाद

•

साहित्य मंच

•

कथा/कवि संधि

•

सांस्कृतिक विनिमय

•

अनुवाद कार्यशाला

•

नए प्रकाशन

सचिव की क़लम से...

जन्म जीवन की एक महत्त्वपूर्ण घटना है, वह व्यक्ति की हो या किसी संस्था की। इस संसार में प्रवेश करते ही जीवनरूपी राह में अपनी मंज़िल को पाने के लिए क़दम-क़दम पर चुनौतियों का सामना करना होता है। एक ही समय में काँटों और पत्थरों भरे रास्ते पर ध्यान से चलते हुए सफलता और उत्साह से भरे क्षितिज तक पहुँचने के लिए कोशिश करना वास्तव में किसी इतिहास का एक महत्त्वपूर्ण बिंदु है। अकादेमी हर स्थापना दिवस पर आत्मसुधार का प्रयास करती रही है। अपनी कमियों को दूर कर खुद को बेहतर बनाने और देश की साहित्यिक सेवा करने का हमारा प्रयास जारी रहेगा। आगे का रास्ता लंबा है तथा हमारे संरक्षकों और शुभचिंतकों के समर्थन का हमें विश्वास है। इस वर्ष का स्थापना दिवस व्याख्यान लब्धप्रतिष्ठ लेखक, आलोचक डॉ. शशि थुरूर द्वारा दिया गया। यह एक यादगार क्षण था तथा डॉ. थुरूर द्वारा दिए गए व्याख्यानों में यह एक बहुत ही यादगार व्याख्यान था। डॉ. थुरूर ने 'दर्शकों/श्रोताओं की चिंता : अंग्रेज़ी में भारतीय लेखन की दुविधा' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। स्थापना दिवस का आयोजन अकादेमी के सभी क्षेत्रीय कार्यालयों में भी किया गया।

अकादेमी ने अपने कार्यक्रम के एक भाग के रूप में राज्य अकादमियों और भारत के राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों को आपसी तालमेल, सहयोग और आपसी संवर्धन के लिए आमंत्रित किया। साहित्य अकादेमी और राज्य अकादमियों के साथ यह इस प्रकार की दूसरी बैठक थी तथा राज्य अकादमियों और राज्य सरकारों ने आने वाले समय में और अधिक सहयोग देने का आश्वासन दिया। अकादेमी सदैव किसी भी कार्यक्रम/योजना, जिससे कि भारत की सभी भाषाओं की साहित्यिक परंपरा समृद्ध हो, में भागीदारी की इच्छुक है। अकादेमी द्वारा अपने नियमित कार्यक्रमों के माध्यम से देश के उत्तर-पूर्वी क्षेत्रों में साहित्यिक मंच, संगोष्ठियों एवं कार्यशालाओं का नियमित आयोजन किया जा रहा है। अकादेमी द्वारा देश की साहित्यिक विभूतियों के प्रति सम्मान व्यक्त करने के लिए अनेक जन्मशती संगोष्ठियों का आयोजन तथा उन अवसरों पर उन पर पुस्तकों का प्रकाशन भी किया गया। हमेशा की तरह अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर अकादेमी के सभी कार्यालयों में कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस दौरान अकादेमी द्वारा मौखिक और आदिवासी साहित्य पर संगोष्ठी का आयोजन इस उद्देश्य से किया गया कि अधिक से अधिक आदिवासी साहित्य को एकत्र कर उनका संरक्षण किया जा सके।

मैं साहित्य अकादेमी के सभी संरक्षकों, शुभचिंतकों का उनके निरंतर सुझाव एवं मार्गदर्शन के लिए आभार व्यक्त करता हूँ। आप सभी को बुद्ध पूर्णिमा की शुभकामनाएँ।

डॉ. के. श्रीनिवासराव

संपादक की ओर से

दार्शनिक एमरसन कहता है कि हर दौर को स्वयं अपना क्लासिक पैदा करना चाहिए अर्थात हर साहित्य में उन समकालीन अभिरुचियों और विशेषताओं के लिए स्थान ज़रूरी है। साहित्य में 'सौंदर्य' ही सबकुछ नहीं है, उसमें विचारधारा का ख़ास महत्त्व है। साहित्य में 'सौंदर्य' ही नहीं 'सत्य' और 'शिव' भी महत्त्वपूर्ण हैं। आख़िर क्या कारण है कि इस समय कहीं किसी देश में 'रामायण' 'ईलियड', 'डिवाइन कॉमेडी' 'शाहनामा' जैसी कृतियाँ नहीं लिखी जा रही हैं। कारण यही है कि साहित्य अपने समय की सीमाओं के भीतर ही लिखा जा सकता है। तुलसीदास, कबीर, मीर और ग़ालिब अपने समय में ही हो सकते थे। दिल्ली की शायरी अपने दौर के बाद लखनऊ में न चल सकी न लखनवी शायरी अपने समय के पहले दिल्ली में जन्म ले सकी। यह सब केवल संयोग नहीं ऐतिहासिक सच्चाई है।

साहित्य किसी विचारधारा के प्रसार का माध्यम हो तो सकता है पर हर माध्यम साहित्य नहीं है। अख़बारों से बढ़कर प्रचार प्रसार का आंदोलन या माध्यम भला क्या हो सकता है, पर उन्हें साहित्य नहीं कहा जा सकता। अख़बारों में सामयिक घटनाओं से अधिक कुछ नहीं होता जबकि साहित्य में उनके अतिरिक्त एक अन्य तत्त्व भी होता है जिसका संबंध एक पूरे युग से है- उसकी विचारधारा, भावना या संवेदना से भी; जिसके बल पर साहित्य हर युग के लिए उपयोगी बन जाता है।

संपादक : डॉ. ख़ुर्शीद आलम
ई-मेल : po.ho1@sahitya-akademi.gov.in

अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 8 मार्च 2016 को अकादेमी के सभागार में महिला लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए संक्षेप में नारीत्व के महत्त्व को बताया तथा एक नारी की उसके जीवन की विविध भूमिकाओं को रेखांकित किया। श्रीमती अनिता अग्निहोत्री, सचिव, सामाजिक न्याय एवं सशक्तिकरण मंत्रालय, भारत सरकार ने अपने वक्तव्य में कहा कि नारीत्व एक वरदान एवं ज़िम्मेदारी दोनों है तथा महिला इन भूमिकाओं को अच्छी तरह निभाती है। तत्पश्चात् उन्होंने महिला कवयित्रियों को कविता पाठ के लिए आमंत्रित किया। पाठ सत्र विभिन्न भावनाओं, अनुभवों और विचारों का सम्मिश्रण था। सुश्री नीलाक्षी चलिहा गोगोई (असमिया), स्वर्णाली भट्टाचार्य (बाङ्ला), नीतू (अंग्रेज़ी), अनामिका (हिंदी), नूतन साखरडांडे (कोंकणी), अराङ्बम मेमचोबी (मणिपुरी), तरसपाल कौर (पंजाबी) एवं नुसरत मेहदी (उर्दू) ने अपनी कविताओं एवं ग़ज़लों का पाठ किया। इसके साथ ही मीनाक्षी भरत (अंग्रेज़ी), आकांक्षा परे (हिंदी) एवं सुमिता पाठक (मैथिली) ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं। पढ़ी गई रचनाएँ श्रोताओं द्वारा सराही गईं।

बायें से : मीनाक्षी भरत, गीतांजलि चटर्जी, के. श्रीनिवासराव, अनिता अग्निहोत्री, चलिहा गोगोई, स्वर्णाली भट्टाचार्य एवं अनामिका

8 मार्च 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन 8 मार्च 2016 को किया गया। क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं श्रोताओं का स्वागत किया तथा प्रतिभागियों का परिचय दिया। प्रख्यात रेडियोलाजिस्ट डॉ. आर.के. सरोजा, प्रसिद्ध कन्नड कवयित्री श्रीमती नलिनी मैया, मलयाळम् भाषा की मशहूर कवयित्री श्रीमती रेमा प्रसन्ना इस कार्यक्रम की प्रतिभागी थीं। डॉ. सरोजा ने अपने वक्तव्य में भारत में महिला सशक्तिकरण के अग्रदूतों और महिला मुक्ति आंदोलन के प्रयासों को याद किया और इस बात पर प्रकाश डाला कि महिलाओं की वर्तमान पीढ़ी किस प्रकार अग्रदूतों के किए गए परिश्रम के परिणाम का आनंद ले रही है। उन्होंने बच्चों के माता-पिता से लड़कियों की देखभाल, स्वतंत्रता और ज्ञान देने की अपील की। श्रीमती नलिनी मैया ने अपने व्याख्यान में कहा कि यद्यपि देश में महिलाओं की समग्र स्थिति में काफ़ी सुधार हुआ है पर और अभी बहुत कुछ किए जाने की ज़रूरत है और देश में महिलाओं के उत्थान और सशक्तिकरण के लिए कट्टरपंथियों के पूर्ण

स्वागत वक्तव्य देते हुए अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव

कविता पाठ करती हुई श्रीमती नलिनी मैया

उन्मूलन का आह्वान किया। इस अवसर पर उन्होंने अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया। श्रीमती रीमा प्रसन्ना ने महिलाओं की समग्र श्रेष्ठता की बात की और *श्रीमद्भगवतगीता* के अंशों को उद्धृत किया। उन्होंने अपनी कुछ मलयाळम् कविताओं तथा उनके अंग्रेज़ी अनुवाद का भी पाठ किया। इस अवसर पर इंदिरा गोस्वामी पर अकादेमी द्वारा निर्मित और जाह्नू बरुआ द्वारा निर्देशित वृतचित्र को भी प्रदर्शित किया गया।

श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

8 मार्च 2016, चेन्नै

अकादेमी के उप-कार्यालय चेन्नै द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन 8 मार्च 2016 को भारतीय विद्या भवन, चेन्नै में किया गया।

प्रसिद्ध तमिळ लेखिकाएँ पी. शिवकामी, तारा गणेशन एवं वैगी सेलयी ने कार्यक्रम में भाग लिया तथा समकालीन तमिळ साहित्य में नारीवादी लेखन के विभिन्न आयाम के बारे में चर्चा की। सुश्री तारा गणेशन ने तमिळ नारीवादी लेखन का एक ऐतिहासिक अवलोकन प्रस्तुत किया।

सुश्री वैगई सेलनी ने महिला लेखिकाओं द्वारा लिखित यात्रा वृत्तांत के बारे में तथा एक महिला एवं लेखिका होने के नाते सामने आने वाली विविध चुनौतियों के बारे में बात की। सुश्री पी. शिवकामी ने तमिळ महिला लेखन की धाराओं, विभिन्न प्रवृतियों और परंपराओं का महत्त्वपूर्ण मूल्यांकन प्रस्तुत किया तथा तमिळ महिला लेखन एवं आधुनिक भारत की अन्य भाषाओं के महिला लेखन का तुलनात्मक विश्लेषण भी प्रस्तुत किया।

अकादेमी की तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री मावन ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

युवा संताली लेखक सम्मिलन

30 अप्रैल 2016, दुमका

साहित्य अकादेमी द्वारा 30 अप्रैल 2016 को दुमका, झारखंड में 'युवा संताली लेखक सम्मिलन' का आयोजन किया गया।

सम्मिलन का उद्घाटन करते हुए सुपरिचित संताली विदुषी डॉ. शर्मिला सोरेन ने युवाओं को प्रोत्साहित करने के लिए इस तरह के आयोजन ज़्यादा से ज़्यादा संख्या में किए जाने पर बल दिया।

प्रारंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने इस सत्र की अध्यक्षता करते हुए संताली भाषा के कई लिपियों में लिखे जाने को संदर्भित करते हुए व्यापक रूप से ओलचिकी लिपि की स्वीकार्यता पर ज़ोर दिया। इस सत्र में श्री बाबूधन मुर्मू ने 'डिंगरा', 'समाज रेन दिलगारिया' और सोहराय गीत प्रस्तुत किए, जबकि श्री सुनील बास्की ने 'ए जुवान आयगे देलाङ', 'आस' एवं 'रोङ' शीर्षक कविताओं का पाठ किया। श्री महेंद्र बेसरा ने 'मांदाली' शीर्षक कहानी प्रस्तुत की।

सम्मिलन के कहानी-पाठ सत्र की अध्यक्षता अकादेमी में संताली परामर्श मंडल के सदस्य एवं सुपरिचित संताली साहित्यकार श्री चूंडा सोरेन ने की। इस सत्र में श्रीमती होलिका मरांडी ने 'ओलहात' तथा श्री पटलन सोरेन ने 'लाबनी ताड़ी' शीर्षक कहानी का पाठ किया।

कार्यक्रम में बड़ी संख्या में उपस्थित संताली साहित्य प्रेमियों ने पठित रचनाओं की पर्याप्त सराहना करते हुए युवा लेखकों का उत्साह बढ़ाया।

साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस

12 मार्च 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा अपने 62वें स्थापना दिवस के अवसर पर 12 मार्च 2016 को प्रसिद्ध उपन्यासकार, समालोचक तथा सांसद डॉ. शशि थुरूर को आमंत्रित किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने डॉ. थुरूर का स्वागत करते हुए अकादेमी की यात्रा के बारे में संक्षेप में बताया। श्री राव ने उन विभूतियों का उल्लेख किया जिन्होंने अकादेमी को यह स्थान दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

डॉ. थुरूर ने अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि अकादेमी ने मुझे यह अवसर दिया। डॉ. थुरूर ने अपना वक्तव्य 'दर्शकों की चिंता : अंग्रेज़ी भारतीय लेखन की दुविधा' विषय पर दिया। डॉ. थुरूर ने संस्कृति, कला और अधिक से अधिक मानव कल्पना की दुनिया पर वैश्वीकरण के स्वभावों के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि लोगों को प्रायः यह लगता है कि वैश्वीकरण केवल व्यापार और अर्थव्यवस्था को प्रभावित करता है और जीवन शैली को अनदेखा करता है। वैश्वीकरण के साकारात्मक एवं नाकारात्मक दोनों पक्ष होते हैं। उन्होंने वैश्वीकरण के दूसरे प्रभाव पर प्रकाश डाला। किसी के पुरस्कार प्राप्त करने की विस्मृति, जो उसकी पहचान होती है, अतः लेखक पर वैश्वीकरण का प्रभाव अपरिहार्य है। डॉ. थुरूर ने लेखन, लेखक, पाठ, पाठक मैट्रिक्स के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि लेखन एक सहज वृत्ति गतिविधि है अगर कोई पसंद करता है, यह सबसे अंतरंग भावनाओं और संवेदनाओं को व्यक्त करने का ढंग है। डॉ. थुरूर ने अपनी व्याख्या यह कहते हुए समाप्त की कि किसी भी साहित्य को जिस मूल भाषा में इसका सृजन किया गया था उससे ऊपर उठना चाहिए।

डॉ. शशि थुरूर का स्वागत करते हुए डॉ. के. श्रीनिवासराव

व्याख्यान के बाद श्रोताओं के साथ डॉ. थुरूर का एक संक्षिप्त संवाद भी हुआ।

12 मार्च 2016, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 12 मार्च 2016 को अकादेमी सभागार में 'साहित्य मंच' का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी के स्थापना दिवस के महत्त्व के बारे में बताया तथा प्रतिभागियों का परिचय दिया। कोंकणी भाषा की सुश्री मीरा सावकुर ने अपनी मूल कोंकणी कविता तथा उसका अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। गुजराती की सुश्री उर्वशी पंड्या ने अपनी कहानी 'बुआ माँ' का पाठ किया। मराठी की प्रसिद्ध कवियित्री सुश्री नीरजा ने अपनी 'रंगीली चूड़ियाँ', 'एक चित्र शहर का', 'खेल' एवं 'शहर' आदि कविताओं का हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किया। सिंधी की सुश्री सोनी मीरचंदानी ने अपनी सिंधी कहानी 'बटुआ में हीरो' का अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किया। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

व्याख्यान देते हुए डॉ. शशि थुरूर

12 मार्च 2016, बेंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर 12 मार्च 2016 को अकादेमी के सभागार में साहित्य मंच का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने आरंभिक वक्तव्य दिया। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने साहित्य मंच की अध्यक्षता की तथा कन्नड भाषा के प्रख्यात दलित लेखक डॉ. सिद्धलिंगय्या ने बीज वक्तव्य दिया। डॉ. सुब्रह्मण्यम ने कहा कि अकादेमी साहित्य जगत के सभी लोगों को साथ लेकर साहित्य के क्षेत्र में अनुकरणीय कार्य कर रही है। डॉ. सिद्धलिंगय्या ने अपने वक्तव्य में कहा कि साहित्य में अच्छा करने की क्षमता है और यह भी कहा कि पारदर्शी और उत्साही लेखकों के अच्छे साहित्य का परिणाम है। इसलिए उन्होंने साहित्यिक समुदाय से भारतीय भाषाओं और भारतीय साहित्य में विकास के लिए काम करने का आग्रह किया। उन्होंने अकादेमी से अपने तीस वर्षों के सान्निध्य को याद किया। डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि साहित्य अकादेमी एकमात्र ऐसी संस्था है जो समस्त भारतीय भाषाओं में रचनात्मकता और साहित्य को बढ़ावा देती है और इस पर प्रकाश डाला कि किस प्रकार 20वीं सदी के भारतीय साहित्य की विभूतियों ने अकादेमी की स्थापना की और उसकी निरंतरता के लिए काम किया। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

12 मार्च 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा अपने स्थापना दिवस के अवसर पर 12 मार्च 2016 को अकादेमी सभागार में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा श्री गौतम प्रसाद बरुआ, श्री हेमेन भट्टाचार्य, श्रीमती मंडा मुखोपाध्याय, श्री रबींद्र प्रसाद पांडा, श्री रविशंकर बल एवं श्री श्यामल कांति दास ने इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त किए। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की स्थापना, कार्य-पद्धति आदि के बारे में चर्चा की। श्रीमती मंदा मुखोपाध्याय एवं श्री श्यामल कांतिदास ने अपनी कविताएँ तथा श्री रविशंकर बल ने अपनी कहानी का पाठ किया। श्री हेमेन भट्टाचार्य ने भारतीय साहित्य की परंपरा के संरक्षण में साहित्य अकादेमी की भूमिका के बारे में बात की। श्री गौतम प्रसाद बरुआ ने साहित्य अकादेमी की भाषायी परंपराओं के बीच सेतु की भूमिका के बारे में चर्चा की। श्री रबींद्र प्रसाद पंडा ने भारतीय साहित्य के एक प्रवर्तक के रूप में साहित्य अकादेमी की भूमिका की बात की तथा डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अकादेमी की उपलब्धियों की चर्चा की।

साहित्य अकादेमी स्थापना दिवस के अवसर पर कोलकाता में आयोजित *साहित्य मंच* का एक दृश्य

12 मार्च 2016, चेन्नै

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा अकादेमी की स्थापना दिवस पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन भारतीय विद्या भवन चेन्नै में 12 मार्च 2016 को किया गया जिसमें प्रसिद्ध तमिळ लेखक/आलोचक श्री रामकृष्णन को आमंत्रित किया गया था। अकादेमी के चेन्नै कार्यालय के प्रभारी डॉ. राजमोहन ने प्रतिभागी एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए आमंत्रित अतिथि का परिचय दिया तथा स्थापना दिवस के महत्त्व को रेखांकित किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री मावन ने आधुनिक भारत में तमिळ साहित्य के विकास में साहित्य अकादेमी के योगदान के बारे में बात की। श्री रामकृष्णन ने साहित्य अकादेमी की विभिन्न धारणाओं को तथा तमिळ साहित्य के विकास में योगदान की बात की। श्री रामकृष्णन ने सामान्य रूप से अकादेमी का सूक्ष्म मूल्यांकन प्रस्तुत किया तथा अकादेमी की 62 वर्षों की राष्ट्र की साहित्य सेवा की उपलब्धियों एवं असफलताओं को रेखांकित किया। तमिळ भाषा के लब्धप्रतिष्ठ लेखक, कवि, आलोचक एवं साहित्य प्रेमी कार्यक्रम में उपस्थित थे। श्री मावन ने धन्यवाद प्रस्तुत किया।

राज्य अकादमियों एवं राज्य सरकारों के प्रतिनिधियों के साथ बैठक

17 मार्च 2016, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा 16 राज्य अकादमियों एवं भारत के 14 राज्य सरकार के प्रतिनिधियों के साथ एक बैठक का आयोजन 17 मार्च 2016 को उन संभावनाओं का पता लगाने के लिए कि किस प्रकार उनके साथ संबंधों को और मज़बूत बनाया जा सकता है, गुवाहाटी में किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए बैठक में भाग लेने के लिए उनका आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि इस बैठक के आयोजन का उद्देश्य उन संभावनाओं का पता लगाने के लिए किया गया है कि किस प्रकार साहित्य के क्षेत्र में सहयोगात्मक कार्यक्रमों का आयोजन हो सकता है ताकि राज्य अकादमियाँ और क़रीब आ सकें और एक-दूसरे के क्रियाकलापों को जान सकें। श्री राव ने आगे कहा कि अकादेमी विभिन्न राज्यों के दूर-दराज़ क्षेत्रों में अपने कार्यक्रम करना चाहती है और यह केवल राज्य सरकार/ राज्य अकादमियों के सहयोग से ही संभव है। उन्होंने आगे कहा कि यदि अकादमियों के बीच उचित तालमेल हो और हम एक-दूसरे की गतिविधियों को जान सकें तो कार्यक्रमों एवं प्रकाशनों के दुहराव से बच सकते हैं। उन्होंने यह भी कहा कि साहित्य अकादेमी के संविधान के अनुसार अकादेमी की कार्यकारी समिति में प्रत्येक राज्य अकादमी का प्रतिनिधित्व होता है परंतु केवल मणिपुर स्टेट कला एकेडमी एवं गोवा कोंकणी एकेडमी के अतिरिक्त किसी राज्य अकादमी में केंद्रीय साहित्य अकादेमी का प्रतिनिधित्व नहीं होता है।

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि देश का साहित्य और संस्कृति ही जीवित और बचे हुए हैं क्योंकि यह आम जनता तक पहुँचते हैं और यही अकादेमी का उद्देश्य भी होना चाहिए। गुजरात साहित्य अकादमी के चेयरमैन श्री भावेश झा ने कहा कि गुजरात साहित्य अकादमी सात विभिन्न अकादमियों का संगठन है। अकादमी का हाल ही में पुनर्गठन किया गया है और उन्होंने साहित्य अकादेमी से निवेदन किया कि अकादेमी और आदिवासी उत्सव का आयोजन करे और गुजरात साहित्य अकादमी को उन कार्यक्रमों में शामिल करे। पश्चिमबंग बांग्ला एकेडमी के सचिव श्री शेखर बनर्जी ने पश्चिम बंग बांग्ला एकेडमी की संरचना, लक्ष्य, कामकाज एवं उद्देश्य के बारे में सूचना दी। उन्होंने कहा कि यद्यपि वहाँ और भी राज्य अकादमियाँ हैं लेकिन वे शायद ही एक-दूसरे को जानते हों, इसलिए हर किसी को राज्य अकादमियों को मज़बूत करने के लिए यथासंभव सहयोग करना चाहिए।

दिल्ली सरकार के कला एवं संस्कृति विभाग के सचिव श्री वी.सी.पांडिय ने कहा कि हर अकादमी अपने क्षेत्र की भाषाओं की तरक़्क़ी के लिए काम कर रही है और अन्य भाषाओं/ क्षेत्रों के साहित्य के विकास के लिए काम नहीं कर रही है। उन्होंने बताया कि दिल्ली सरकार के अधीन छः अकादमियों जैसे हिंदी, सिंधी, पंजाबी, उर्दू, संस्कृत, मैथिली-भोजपुरी तथा साहित्य कला परिषद् है जो दृश्य कला, संगीत, नृत्य, नाटक एवं संस्कृति के लिए काम करती हैं। उन्होंने सुझाव दिया कि राज्य अकादमियों को अपने क्षेत्र के सुदूर इलाक़ों में कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए। ओड़िशा साहित्य अकादमी के सचिव श्री अश्विन कुमार मिश्र ने बताया कि ओड़िशा अकादमी केंद्रीय साहित्य अकादेमी के सहयोग से पूरे राज्य में कार्यक्रमों का आयोजन करती है।

जम्मू एवं कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एवं लैंग्वेजेज़ के सचिव डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने बताया कि वे साहित्य अकादेमी से गत कई वर्षों से जुड़े हुए हैं और उनकी राय में यह सभी राज्य अकादमियों की माँ है। उन्होंने सुझाव दिया कि साहित्य अकादेमी द्वारा अपने सभी 24 भाषाओं के अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए। यह अकादेमी का एक नियमित कार्यक्रम होना चाहिए। तेलंगाना सरकार के संस्कृति विभाग के निदेशक श्री ममिदी हरिकृष्ण ने कहा कि तेलंगाना देश का नया राज्य है और वे साहित्य व संस्कृति से संबंधित कई बातें जानने के लिए आए हैं। राज्य सरकार साहित्य अकादेमी, संगीत नाटक अकादेमी और ललित कला अकादेमी की तरह तीन अकादमियाँ बनाने पर विचार हर रही है। उन्होंने यह भी बताया कि तेलंगाना सरकार दो विश्वस्तरीय ऑडिटोरियम हैदराबाद और वारंगल में बनाने का विचार कर रही है। उन्होंने समस्त अकादमियों के ओर से पूर्ण सहयोग प्रदान करने का आश्वासन दिया।

गोवा कोंकणी एकेडमी के सचिव श्री नारायण एस. नवती ने एकेडमी की कार्यपद्धति के बारे में बताया और कहा कि गोवा कोंकणी एकेडमी के पास पुस्तक प्रकाशन की कई योजनाएँ हैं जैसे साहित्य प्रभा, प्रतिभा सम्मान आदि। एकेडमी संदर्भ ग्रंथों एवं पाठ्य पुस्तकों के रूप में शोधपरक प्रकाशन करती है। एकेडमी ने कोंकणी-मराठी, कोंकणी-हिंदी, तथा कोंकणी-पुर्तगीज़ जैसे शब्दकोश का प्रकाशन किया है। एकेडमी नाटक के संरक्षण के लिए भी शतप्रतिशत अनुदान प्रदान करती है। हिमाचल प्रदेश एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के उपाध्यक्ष डॉ. प्रेम शर्मा ने कहा कि साहित्य अकादेमी के साहित्य सेवाओं से प्रभावित होकर कई राज्य सरकारों ने राज्य अकादमियों की स्थापना की। उन्होंने सुझाव दिया कि इस प्रकार की बैठकों का आयोजन विभिन्न स्थानों पर किया जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि हिमाचल

प्रदेश एकेडमी साहित्य अकादेमी को कुछ सहयोगात्मक कार्यक्रम के विस्तृत प्रस्ताव भेजेगी। मध्य प्रदेश साहित्य एकेडमी के निदेशक श्री आनंद नारायण सिन्हा ने सभी राज्य अकादमियों से अनुरोध किया कि अप्रैल में उज्जैन में आयोजित होने वाले सिंहस्थ कुंभ के अवसर पर कुछ साहित्यिक आयोजन/प्रदर्शनी का आयोजन किया जाना चाहिए। हरियाणा साहित्य एकेडमी की निदेशक श्रीमती कुमुद बंसल ने बताया कि हरियाणा साहित्य एकेडमी द्वारा हरियाणा के गाँवों में कविता, कहानियों पर आवासीय कार्यशाला का आयोजन किया जाता है जिससे अकादमी आमजन तक पहुँच पाती है तथा नई पीढ़ी के लेखकों को अवसर प्रदान करती है। चंडीगढ़ साहित्य एकेडमी के उपाध्यक्ष श्री माधव कौशिक ने साहित्य अकादेमी से आग्रह किया कि अकादेमी चंडीगढ़ में अपने क्षेत्रीय कार्यालय की स्थापना करे, इसके लिए राज्य सरकार हर संभव सहायता प्रदान करेगी। त्रिपुरा सरकार के कला एवं संस्कृति विभाग के निदेशक श्री शांतनु देव बर्मन ने त्रिपुरा में तीन दिवसीय साहित्य एवं संस्कृति उत्सव के आयोजन का प्रस्ताव रखा जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों और कलाकारों को आमंत्रित किया जाए। मेघालय सरकार कला एवं संस्कृति विभाग की लाइब्रेरियन सुश्री ई. आर. रुमंग ने सहयोगात्मक साहित्यिक कार्यक्रमों के लिए मेघालय सरकार द्वारा हर प्रकार के सहयोग का आश्वासन दिया।

डॉ. के. श्रीनिवासराव ने बैठक का समाहार करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी समकालीन भारतीय साहित्य, इंडियन लिट्रेचर तथा संस्कृत प्रतिभा नामक तीन पत्रिकाएँ प्रकाशित करती है। हम इन पत्रिकाओं को राज्य अकादमियों को भेज सकते हैं तथा पारस्परिक विनिमय के आधार पर राज्य अकादमियाँ अपनी पत्रिकाएँ साहित्य अकादेमी को भेज सकती हैं। साहित्य अकादेमी और राज्य अकादमियाँ एक-दूसरे की गतिविधियों को अपने मेलिंग लिस्ट में अंकित कर सकती हैं। सचिव महोदय ने सदस्यों के प्रति आभार व्यक्त किया एवं भविष्य में इस प्रकार की दूसरी बैठक की आशा व्यक्त की।

नेपाली कवि सम्मिलन

20 मार्च 2016, शिलांग

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, शिलांग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली कवि सम्मिलन' का आयोजन 20 मार्च 2016 को बाबू मणिसिंह गुरुङ सभागार, गोर्खा पाठशाला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिलांग में किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रतिष्ठित नेपाली साहित्यकार श्री सूर्य श्रेष्ठ ने की, जिसमें श्री छविलाल उपाध्याय, श्री सीताराम पौड्याल, श्री तुलसीराम फुलेल, श्री सूर्यप्रसाद अधिकारी, श्री उमेश सुब्बा और श्रीमती मंजु लामा ने अपनी कविताओं का पाठ किया। प्रस्तुत कविताओं में कविता की विभिन्न शैलियों गीत, ग़ज़ल, मुक्त छंद की रचनाएँ शामिल थीं। पठित कविताएँ जहाँ पारंपरिक नेपाली समाज और संस्कृति का दर्पण थीं, वहीं उनमें आधुनिकता के प्रभाव स्वरूप बदलते समय समाज और मानसिकता का चित्रण भी किया गया था। कवियों को श्रोताओं की भरपूर सराहना प्राप्त हुई।

27 मार्च 2016, इंफ़ाल

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, मणिपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली कवि सम्मिलन' का आयोजन 27 मार्च 2016 को चारहजारे, मणिपुर में किया गया। सम्मिलन की अध्यक्षता दार्जीलिंग से पधारे सुपरिचित नेपाली साहित्यकार श्री गोपीचंद्र प्रधान ने की और संचालन परिषद् के सचिव श्री कीर्तिमणि खतिवड़ा ने किया। कार्यक्रम में सर्वश्री सुकराज दियाली, घनश्याम कोइराला, सूरज चापागाईं और सुश्री सृष्टि पौड्याल ने अपनी कविताओं का पाठ किया। पठित कविताओं में आधुनिक जीवन मूल्यों और नेपाली समाज की व्यथाकथा का चित्रण था। सूरज चापागाईं ने अपनी कविता में युद्ध का विरोध करते हुए शांति का आह्वान किया, वहीं सृष्टि की कविता का भाव यह था कि भौतिक सुख सच्चा सुख नहीं है। कार्यक्रम में मणिपुर की नेपालीभाषी जनता की उत्साहपूर्ण उपस्थिति थी।

बाएँ से : सृष्टि पौड्याल, सुकराज दियाली, गोपीचंद्र प्रधान, घनश्याक कोइराला एवं सूरज चापागाईं

संगोष्ठी

हरचरण सिंह जन्मशतवार्षिकी

14-15 मार्च 2016, भटिंडा

साहित्य अकादेमी नई दिल्ली द्वारा बाबा फ़रीद कॉलेज, भटिंडा के सहयोग से वरिष्ठ पंजाबी लेखक हरचरण सिंह जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 14-15 मार्च 2016 को सेमिनार हॉल, बाबा फ़रीद कॉलेज, भटिंडा में किया गया। अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा हरचरण सिंह के पंजाबी भाषा एवं साहित्य में योगदान की विस्तार से चर्चा की। बाबा फ़रीद ग्रूप ऑफ़ इंस्टीट्यूशंस के अध्यक्ष श्री गुरमीत सिंह धालीवाल ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। संगोष्ठी में भटिंडा के डिप्टी कमिश्नर श्री बसंत गर्ग मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। श्री सतीश कुमार वर्मा ने अपने बीज-वक्तव्य में कहा कि भारतीय साहित्य में हरचरण सिंह के योगदान का पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए। प्रसिद्ध नाटककार अजमेर सिंह औलख विशिष्ट अतिथि के रूप में शामिल थे। कार्यक्रम तीन सत्रों में विभाजित था। सर्वश्री हरभजन सिंह भाटिया जसविंदर सिंह, सतनाम सिंह जस्सल ने सत्रों की अध्यक्षता की तथा उमा सेठी, पाली भुपिंदर सिंह, गुरमीत सिंह हुंदाल, अनिता मडिया, रंजू बाला, सतप्रीत सिंह जस्सल, गुरप्रीत कौर, रवींद्र कुमार, प्रदीप कुमार, उषा रानी, मनोरमा समाग एवं तरसपाल कौर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दीनानाथ नादिम : जन्मशतवार्षिकी

15-16 मार्च 2016, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी एवं जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के संयुक्त तत्वावधान में मशहूर कश्मीरी शायर दीनानाथ नादिम जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 15-16 मार्च 2016 को जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सेमिनार हॉल में किया गया।

साहित्य अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. मुहम्मद ज़माँ आज़ुर्दा ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा साहित्य अकादेमी एवं जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ द्वारा कश्मीरी भाषा एवं साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। प्रो. रहमान राही ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में दीनानाथ नादिम के विभिन्न साहित्यिक उपलब्धियों पर प्रकाश डाला। डॉ. गुलज़ार अहमद ने श्री मुहम्मद यूसुफ़ टेंग की तरफ़ से बीज-वक्तव्य दिया। प्रो. मरग़ूब बानिहाली ने कश्मीरी भाषा को संरक्षित और मातृभाषा के रूप में बढ़ावा देने और सामाजिक क्षेत्र में अपनी भूमिका बढ़ाने की ज़रूरत पर बल दिया। जे. एंड के. एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सेक्रेट्री डॉ. अज़ीज़ हाजिनी ने नादिम की कश्मीरी शायरी में योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ अहमद ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री फ़ारूक़ नाज़की ने की तथा श्री शफ़ी शौक़ और फ़ारुक़ फ़ैयाज़ ने नादिम के व्यक्तित्व एवं लेखन पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री शांतिवीर कौल ने की। प्रो. बशर बशीर, श्री ग़ुलाम नबी आतिश एवं श्री अब्दुल अहद ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। विद्वानों ने अपने आलेख में कश्मीरी शायरी के विकास में नादिम की भूमिका को उस विशेष अवधि के संदर्भ में रेखांकित किया जिसमें कवि उभरा।

संगोष्ठी के दूसरे दिन तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री ग़ुलाम नबी ख़याल ने की। श्री जी. आर. हसरत गड्डा, श्री मुश्ताक़ अहमद मुश्ताक़ एवं श्री सतीश विमल ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री मिशल सुल्तानपुरी ने की तथा सर्वश्री बी.एन.बेताब एवं आफ़ाक़ अज़ीज़ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। कश्मीरी लेखकों, विद्वानों, भाषाविदों एवं कवियों की भारी संख्या में उपस्थिति रही तथा चर्चा में शामिल रहे।

प्रतिभा बसु जन्मशतवार्षिकी

17 मार्च 2016, गुवाहाटी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा कॉटन कॉलेज के सहयोग से प्रतिभा बसु जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 17 मार्च 2016 को कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कॉटन कॉलेज की बाङ्ला विभागाध्यक्ष प्रो. मीता चक्रवर्ती ने आरंभिक वक्तव्य दिया। प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक श्री सिरशेंदु मुखोपाध्याय संगोष्ठी में मुख्य अतिथि के रूप में शामिल हुए। श्री गोपाल दत्त भौमिक ने बीज वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

सुश्री बेलदास एवं कनकवती दत्ता ने प्रतिभा बसु के उपन्यास लेखन पर अपना आलेख प्रथम सत्र में प्रस्तुत किया। प्रथम सत्र की

अध्यक्षता सुमिता चक्रवर्ती ने की। द्वितीय सत्र में विनताराय चौधुरी एवं नंदिता भट्टाचार्य ने प्रतिभा बसु के लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया तथा सुश्री मधुमिता भट्टाचार्य ने सत्र की अध्यक्षता की। तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री ब्रजगोपाल ने की तथा प्रतिभा बसु के यात्रा वृत्तांत का पाठ किया। इस सत्र में श्री अकीक मजुमदार ने प्रतिभा बसु के महाभारत के बारे में तथा सुश्री मंजू ने प्रतिभा बसु की यादों के बारे में बात की। समापन वक्तव्य सुश्री उषा रंजन भट्टाचार्य ने दिया।

बोडो लोक साहित्य और इसके सामाजिक व शैक्षिक मूल्य

21 मार्च 2016, बक्सा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'बोडो लोक साहित्य और इसके सामाजिक व शैक्षिक मूल्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन बरमा कॉलेज बरमा, असम में 21 मार्च 2016 को किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बरमा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. टिकेन च. दास ने की। अपने उद्घाटन वक्तव्य में डॉ. अनिल बोरो ने साहित्य अकादेमी द्वारा बोडो भाषा एवं साहित्य के लिए किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया, तथा कहा कि लोक साहित्य पीढ़ी-दर-पीढ़ी हमेशा से स्थानांतरित होता रहता है। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष डॉ. कामेश्वर ब्रह्म ने अपने वक्तव्य में कहा कि संगोष्ठी का विषय भाषा के विकास के लिए महत्त्व रखता है। संगोष्ठी का आयोजन कॉलेज परिसर में करने के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष श्री विश्वेश्वर बसुमतारी ने बीज-वक्तव्य दिया और उन्होंने उत्पत्ति, विकास और लोककथाओं की प्रासंगिकता तथा 21वीं सदी के लोक साहित्य के बारे में बात की। कॉलेज के प्राचार्य डॉ. टिकेन च. दास ने कॉलेज परिसर में संगोष्ठी के आयोजन के लिए अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। बोडो साहित्य सभा के सचिव श्री कमलकांत मुसहरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता बिजनी कॉलेज के प्राचार्य डॉ. बिरहसगिरी बसुमतारी ने की। इस सत्र में श्रीमती खिरुप ब्रह्म, श्री प्रशांत क्रमशः बोडो में प्रतिदिन के जीवन में बोडो लोक साहित्य की भूमिका तथा अनपढ़ों को शिक्षित करना तथा लोक साहित्य का सामाजिक और शैक्षिक विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री धरणीधर वारी ने की तथा श्री रुजब मुसहरी, श्री चित्तरंजन मुसहरी एवं श्री सीताराम बसुमतारी ने लोकसाहित्य समाज के दर्पण के रूप में, लोक साहित्य में बोडो शब्दावली की व्यापकता तथा लोक साहित्य के प्रकार विषय पर क्रमशः अपने विचार व्यक्त किए। श्री धरणीधर वारी के अनुसार लोक साहित्य साहित्य का आरंभ है और साहित्य के प्रेम को पूरा करता है।

बायें से : कमलकांत मुसहरी, कामेश्वर ब्रह्म, टीकेन च. दास, अनिल बोरो, विश्वेश्वर बसुमतारी

तेलुगुभाषी क्षेत्रों में आदिवासी भाषा एवं साहित्य

26-27 मार्च 2016, विशाखापत्तनम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु एवं गिरिजन को-ऑपरेटिव कॉर्पोरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में 'तेलुगुभाषी क्षेत्रों में आदिवासी भाषा एवं साहित्य' विषयक दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 26-27 मार्च 2016 को विशाखापत्तनम में किया गया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा आदिवासी साहित्य के विकास के लिए पूरे देश में किए जा रहे कार्यों को रेखांकित किया। उन्होंने आदिवासी साहित्य को एकत्र एवं संकलित करने पर बल दिया और देश में अकादेमी द्वारा आदिवासी और मौखिक साहित्य केंद्रों की स्थापना के अलावा भाषा सम्मान और नियमित रूप से भाषा सम्मेलनों के आयोजन पर प्रकाश डाला। अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एन. गोपी ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में एक समय में आदिवासी भाषाओं से मुख्यधारा की भाषाओं के विकास पर प्रकाश

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए प्रो. एन. गोपी

डाला और कहा कि इस परिदृश्य में आदिवासी भाषाओं को कमतर समझना ठीक नहीं होगा। उन्होंने कहा कि यह 'सभ्य' है जो अपनी जड़ों से दूर हो रहा है और 'आदिवासियों' में ऐसा नहीं है इसलिए वे अलग-थलग हैं। इस आयोजन के लिए उन्होंने अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। इस सत्र के विशिष्ट अतिथि श्री अकेला रवि प्रकाश ने अपने वक्तव्य में कहा कि जनजातीय भाषाओं के साहित्य को दस्तावेज़ी रूप और लिपि के विकास के लिए कुछ प्रयास किए गए हैं, इन प्रयासों को जारी रखने की कोई कोशिश नहीं की गई। प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. रामकृष्ण रेड्डी ने अपने बीज वक्तव्य में भाषाओं की पूर्व कल्पना के बारे में बात करते हुए कहा कि लोगों को यह समझाना मुश्किल है कि बिना लिपि के भी भाषाएँ हो सकती हैं। उन्होंने इस बात पर प्रकाश डाला कि कई भाषाओं के बारे में बड़ी अज्ञानता है कि एक समय में एक ही लिपि में कई भाषाएँ अपनी अद्वितीय साहित्यिक एवं भाषायी परंपराओं के साथ संभव है। संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री जी. उमा महेश्वर राव ने की। उन्होंने 'गोंडी का भाषा एवं साहित्य' विषय पर बात की। इस सत्र में सुश्री एस. प्रसन्ना एवं श्री च. श्रीनिवासराव ने क्रमशः 'जनजातीय भाषा में लिपि एवं एन्कोडिंग मानक' तथा 'आदिवासी समाज के साहित्य में संघर्ष और आंदोलन' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. वी. रामकृष्ण रेड्डी ने की तथा 'जथापुलु कोंडुली एवं गदाबा की भाषा एवं साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री शक्ति शिवराम कृष्ण, डी. सुर्याधनंजय एवं ए. चंद्रशेखर राव ने अपने आलेख 'कोंडा रेडली, बगथा वाल्मिकुलु एवं कोंडा दोरालू का भाषा एवं साहित्य', 'बंजारा का भाषा एवं साहित्य' तथा 'सवारा का भाषा एवं साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र की अध्यक्षता सुश्री के. मलाया वासिनी ने की तथा 'क्लासिकी तेलुगु साहित्य पर आदिवासी भाषाओं और साहित्य का प्रभाव' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र में तीन विद्वानों सुश्री वादरेवु वीर लक्ष्मी देवी, सुश्री के. श्यामला एवं श्री मदाभुषी संपत कुमार ने क्रमशः 'आदिवासी भाषाओं और साहित्य पर जिन विद्वानों ने काम किया', 'चेंचू एवं यनादुला की भाषाएँ एवं साहित्य' तथा 'एरुकला की भाषाएँ एवं साहित्य' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

चौथे सत्र की अध्यक्षता श्री एन. भक्तवत्सला रेड्डी ने की तथा 'कोर्राजुलु एवं पुजारी की भाषाएँ एवं साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। इस सत्र में श्री सी.आर. एस. सरमा, श्री गोपाराजू नारायणराव एवं श्री न. च. चक्रवर्ती ने क्रमशः 'कोया का भाषा एवं साहित्य', 'आदिवासी साहित्य में परिलक्षित मान्यम पिथुरी' तथा 'आदिवासी छात्र और मेरे शिक्षण अनुभव' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. एन. गोपी ने समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए आदिवासी साहित्य और भाषा के शोध के महत्त्व को रेखांकित किया। श्री वादरेवु चिनावीर बहादुरु ने समापन वक्तव्य में शिक्षित वर्ग के बीच जागरूकता की कमी के बारे में बात की और साहित्य अकादेमी से आदिवासी साहित्य को अन्य भारतीय भाषाओं में अनुवाद कराए जाने की अपील की। समापन टिप्पणी में डॉ. के. श्रीनिवासराव ने आश्वासन दिया कि जहाँ तक संभव होगा अकादेमी आदिवासी साहित्य का अनुवाद कराएगी, ज्ञात हो कि आदिवासी भाषाओं से अन्य मुख्य भाषाओं में अनुवाद करने वाले अनुवादकों की भारी कमी है।

भुवनेश्वर बेहरा जन्मशतवार्षिकी

27 मार्च 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा भुवनेश्वर बेहरा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 27 मार्च 2016 को भुवनेश्वर में किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि श्री बेहरा ने कई मायनों में लेखकों और पाठकों की

कई पीढ़ियों को प्रेरित किया है तथा आने वाली पीढ़ियों को प्रेरित करना जारी रहेगा। अपने उद्घाटन वक्तव्य में प्रसिद्ध ओड़िया कवि श्री राजेंद्र किशोर पंडा ने भुवनेश्वर बेहरा के जीवन से भी बड़ी उनके मानवतावादी व्यक्तित्व की बात करते हुए उनके जीवन से जुड़ी कई घटनाओं को याद किया। साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य एवं संगोष्ठी के मुख्य अतिथि डॉ. रमाकांत रथ ने श्री बेहरा की असाधारण योग्यता के बारे में बात करते हुए आम लोगों के बारे में कलात्मक कौशल के साथ लेखन की बात की। भुवनेश्वर बेहरा की पुत्री डॉ. यशोधरा मिश्र ने अपने बीज वक्तव्य में श्री बेहरा के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के बारे में बात की तथा श्री बेहरा की छोड़ी गई रचनात्मक विरासत के बारे में विस्तार से चर्चा की। उन्होंने यह भी कहा कि श्री बेहरा ओड़िया लेखकों के पहले बैच में से एक थे जिन्होंने अफ्रीका का यात्रा वृत्तांत लिखा था। वे एक सशक्त व्यंग्यकार के रूप में जाने जाते हैं। सत्र के अध्यक्ष श्री सान्तनु कुमार आचार्य ने श्री बेहरा को एक महान कहानीकार के रूप में याद किया जो आम आदमी के साथ सहानुभूति रखता था। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रतिबास शउतरे ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

प्रथम सत्र का विषय था 'भुवनेश्वर बेहरा की आलोचना एवं यात्रा वृत्तांत' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री गोपालकृष्ण रथ ने की। सुश्री प्रतिभा शतपथी एवं प्रो. सुमचु शतपथी ने श्री बेहरा की आलोचना एवं यात्रा वृत्तांत पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र का विषय था बेहरा की कहानियाँ एवं आत्मकथा तथा सत्र की अध्यक्षता श्री सतकड़ी होता ने की। सुश्री ममता दास एवं श्री विनय कुमार बेहरा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. गौरहरि दास ने समापन सत्र की अध्यक्षता की तथा प्रो. मधुसूदन पति ने समापन वक्तव्य दिया। अकादेमी के सहायक संपादक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

भारतीय जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ

29-30 मार्च 2016, बेंगळूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा भारतीय जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ विषयक संगोष्ठी का आयोजन भारतीय विद्या भवन बेंगळूरु में 29-30 मार्च 2016 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा देश भर में जनजातीय साहित्य को बढ़ावा देने के संदर्भ में किए जा रहे पहल के बारे में संक्षेप में बात की। उन्होंने आगे कहा कि यह संगोष्ठी भी अकादेमी द्वारा मुख्यधारा की भाषाओं-संस्कृतियों एवं आदिवासी समाज के संबंधों के रिश्तों के बीच एक बड़ी बहस कराने का प्रयास है। अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने अपने आरंभिक वक्तव्य में जनजातीय संस्कृतियों के बारे में संबंधित पक्षों से उचित परिप्रेक्ष्य और समझ की ज़रूरत के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि इसके कई कारण हैं जैसे वैश्वीकरण,

स्वागत वक्तव्य देते हुए डॉ. के श्रीनिवासराव

औद्योगीकरण आदि के कारण देश के आदिवासी समाज पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ा है। अपने उद्घाटन वक्तव्य में अकादेमी के महत्तर सदस्य डॉ. सीताकांत महापात्र ने कहा कि आदिवासी समाज के अध्ययन एवं अनुसंधान के लिए अलग अकादेमी समय की माँग है और प्रस्तावित अकादेमी में जनजातीय जीवन के सभी परिदृश्यों के अध्ययन और शोध के लिए संसाधन होने चाहिए।

इंदिरा गाँधी राष्ट्रीय जनजातीय यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. तेजस्वी कट्टीमणी ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि आदिवासी समुदाय को मुख्यधारा में लाया जाना चाहिए। उन्होंने एक घटना को उद्धृत किया कि काका कालेलकर ने वरियर एल्विन से आग्रह किया कि भारतीय आदिवासियों के साथ काम करें तथा एक पुस्तक तैयार करें। उन्होंने कहा कि वे इस वास्तविकता से आहत हैं कि जनजातीय भाषाएँ तेज़ी से विलुप्त हो रही हैं। उन्होंने भारत के जनजातीय समुदाय की संस्कृति और भाषाओं के संरक्षण के लिए जनजातीय विश्वविद्यालय द्वारा किए जा रहे प्रयासों की संक्षेप में चर्चा की। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि कला एक वस्तु बनती जा रही है। लोकतंत्र में जनजातीय समुदाय की उपेक्षा नहीं होनी चाहिए, जंगलों एवं वनवासियों का शोषण रोका जाना चाहिए तथा जनजातीय समुदाय को मुख्यधारा में लाना चाहिए। क्षेत्रीय सचिव एस.पी.महालिंगेश्वर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के प्रथम सत्र का विषय था 'आदिवासी भाषा साहित्य एवं संस्कृति में मिथक' तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. एस. सी. बोरा लिंगइयाह ने की। सर्वश्री वी.आर. कचारिया, जावेद राही एवं हेमंत खडके ने अपने आलेख क्रमशः 'गिर, राबड़ी-सरजुगन में मिथक', 'जम्मू कश्मीर के गुज्जर एवं बेकर जनजातियाँ : एक अध्ययन' एवं 'महाराष्ट्र की जनजातियों का

बाएँ से : डॉ. चंद्रशेखर कंबार, डॉ. सीताकांत महापात्र, डॉ. तेजस्वी कट्टीमणी तथा नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम

मिथक' विषय पर प्रस्तुत किए। डॉ. बोरा लिंगइयाह ने जनजातीय जीवन जैसे जोनु कुरबास, कोरागास, सिद्धि एवं अन्य के जीवन को पावर प्रेजेंटेशन द्वारा प्रस्तुत किया। सिद्धि समुदाय के बारे में उन्होंने कहा कि ये जांबिया से आए थे और उन्हें एक दास के रूप में बेचा गया था। उनमें से कुछ कर्नाटक आ गए तथा कुछ गुजरात चले गए। उन्होंने आगे कहा कि जनजातीय नेताओं ने देश के लोगों एवं धरती के साथ संबंध स्थापित किए हैं। मिथक सांस्कृतिक सूचकांक की तरह हैं। शाम को एक सांस्कृतिक कार्यक्रम 'लंबिनी नृत्य' का आयोजन किया गया जिसे श्री गुजासत्ती लंबिनी डांस ट्रुप, बेन्दीगिरी सन्ना थांडा, दावनगेरे द्वारा प्रस्तुत किया गया। संगोष्ठी का दूसरा सत्र 'भारतीय साहित्य, सांस्कृतिक परिवर्तन और संरक्षण में जनजातियाँ' पर आधारित था। सत्र की अध्यक्षता डॉ. अर्जुन देव चारण ने की। सर्वश्री एच. कामखेताइ बसवराज दोनुर एवं श्रुदकुमार भौमिक ने क्रमशः 'मणिपुर की जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ' तथा 'बंगाल की जनजातियों की सांस्कृतिक और साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. चारण ने कहा कि संस्कृति का तात्पर्य है विकसित करना, भारत की आदिवासी संस्कृति में मन सबसे महत्त्वपूर्ण है और भारत के आदिवासी जहाँ रहते हैं उस पर उनका पहला अधिकार है।

तृतीय सत्र का विषय था 'भारत की जनजातियों पर वैश्वीकरण के प्रभाव' और सत्र के अध्यक्ष डॉ. भानुभारती थे। सर्वश्री राजकिशोर मिश्र, उपेन राम हकचाम एवं मालन ने क्रमशः 'ओडिशा की जनजाति पर वैश्वीकरण के प्रभाव', 'संताली जनजाति' तथा 'तमिळ जनजाति' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। चौथा सत्र 'आदिवासी संस्कृति के मिथक और वास्तविकता' विषय को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. अनिल कुमार बोरो ने की। सर्वश्री पी.सी. हेम्ब्रम, ए.टी. मोहनराज एवं काशीनाथ विनायक बरहते ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। क्षेत्रीय सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उन्नीसवीं सदी के बंबई प्रांत की साहित्यिक संस्कृति

2-3 अप्रैल 2016, अहमदाबाद

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा फोर्ब्स गुजराती सभा मुंबई, बलवंत पारेख सेंटर फ़ॉर जनरल सेमॅटिक्स, वडोदरा तथा गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद के सहयोग से 2-3 अप्रैल 2016 को एच.के. आर्ट्स कॉलेज, अहमदाबाद में एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया जो उत्तरार्द्ध पूर्व उपनिवेश और पूर्व औपनिवेशिक काल में गुजराती साहित्य पर केंद्रित था परंतु क्षेत्र की दूसरी भाषाओं को भी जैसे मराठी, सिंधी एवं कोंकणी पर पुर्तगाली औपनिवेशिक संदर्भ में लिया गया। संगोष्ठी का आयोजन अलेक्ज़ेंडर किनलोच फ़ोर्ब्स के 50वीं पुण्यतिथि पर किया गया था। फ़ोर्ब्स ने उन्नीसवीं सदी में गुजराती संस्कृति को दुनिया के सामने लाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि गुजराती भाषा के उल्लेखनीय विद्वान और औपनिवेशिक प्रशासक फ़ोर्ब्स ने 19वीं सदी के बंबई प्रांत में संस्कृति के क्षेत्र में अपने बौद्धिक और शैक्षणिक कौशल को सिद्ध किया था। 1848 में उनके द्वारा स्थापित गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी ने गुजराती में एक पुनर्जागरण की पेशकश की। गुजरात वर्नाकुलर सोसायटी ने पहली सार्वजनिक पुस्तकालय, कन्याओं के लिए विद्यालय, पत्रिकाएँ, समाचार पत्र और गुजरात की साहित्यिक पत्रिका को शुरू किया।

फ़ोर्ब्स के अतुल्य योगदान को याद करते हुए उन्होंने बताया कि अकादेमी की गुजराती परामर्श मंडल की अनुशंसा के अनुसार अकादेमी राममाला को पुनर्मुद्रित कर रही है।

उद्घाटन सत्र में सर्वोच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश न्यायमूर्ति सी.के.ठक्कर एवं बॉम्बे उच्च न्यायालय के पूर्व मुख्य न्यायाधीश न्यायमूर्ति मोहित शाह ने शोभा बढ़ाई। गुजराती कवि एवं विद्वान प्रो. निरंजन भगत ने बीज वक्तव्य दिया। फ़ोर्ब्स गुजराती सभा के अध्यक्ष एवं उद्योगपति श्री नवीन भाई दवे की गरिमामयी उपस्थिति रही। सत्र की अध्यक्षता गुजरात विद्या सभा के अध्यक्ष एवं प्रसिद्ध वास्तुकार डॉ.

बालकृष्ण दोषी ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने उभरते आधुनिक भारतीय संस्कृति के लिए एक रहने की जगह को आकार देने में वास्तुकला की भूमिका की बात की और कहा कि भारत के सिविल सेवा में नियुक्ति से पहले श्री फ़ोर्ब्स इंग्लैंड में एक वास्तुकार के रूप में स्थापित थे। एच.के. आर्ट्स कॉलेज के प्राचार्य सुभाष ब्रह्मभट्ट ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संगोष्ठी के दो दिनों में पाँच तकनीकी सत्र का आयोजन था जिसमें 19वीं सदी के बंबई प्रांत के इतिहास, समाज, अर्थव्यवस्था, शिक्षा, मुद्रण संस्कृति और साहित्य पर विद्वतापूर्ण तथा जानकारी पूर्ण आलेख प्रस्तुत किए गए। गुजराती साहित्य के अध्यक्ष श्री चंद्रकांत टोपीवाला ने गुजराती साहित्य के 1850 के दशक से पहले पूर्व आधुनिक युग के अध्ययन की आवश्यकता पर बल दिया। सरदार पटेल विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति श्री प्रवीणचंद्र पटेल ने कहा कि बंबई प्रांत के कैसे सामाजिक धार्मिक सुधार राष्ट्रवाद के उदय द्वारा बँधा था और कैसे यह एक अधूरी परियोजना बनी रही। प्रसिद्ध इतिहासकार श्री मकरंद मेहता ने 19वीं सदी में गुजरात के आर्थिक रुझान को प्रस्तुत किया और 20वीं सदी के विकास के लिए टी. गज्जर द्वारा स्थापित कला भवन की निर्णायक भूमिका को रेखांकित किया। लब्धप्रतिष्ठ सांस्कृतिक इतिहासकार श्री अच्युत याज्ञनिक के तर्क दिया कि सुधार उच्च वर्ग के लिए प्रतिबंधित था। अल्पसंख्यक, दलित, जनजातियाँ हाशिए पर ही बने रहे और उन्हें नई व्यवस्था का लाभ नहीं मिल सका। प्रसिद्ध आलोचक एवं संपादक श्री शिरीष पांचाल, श्री चंद्रकांत शेठ, सुश्री उषा उपाध्याय एवं राजेश पंड्या प्रसिद्ध कवि एवं आलोचकों ने गुजराती साहित्य की उपलब्धियों को रेखांकित किया और उपेक्षित क्षेत्रों को रेखांकित किया। प्रसिद्ध आलोचक श्री दीपक मेहता ने 19वीं सदी में गुजरात में शिक्षा के विकास की रूपरेखा की व्याख्या की। प्रसिद्ध सांस्कृतिक इतिहासकार श्री वीरचंद धर्मसी ने बताया कि कैसे मनोरंजन के परंपरागत साधनों के विभिन्न रूपों ने अगली सदी की सिनेमा के लिए एक पृष्ठभूमि प्रदान की। श्री अरुण वघेला जिनका आदिवासी संस्कृति पर उल्लेखनीय कार्य है, ने 19वीं सदी के आदिवासी इतिहास के स्रोत का विश्लेषण मुख्यतः अभिलेखीय आँकड़ों के आधार पर किया। श्री हासित मेहता ने 19वीं सदी के उत्तरार्ध में गुजराती साहित्यिक पत्रिका की एक समग्र तसवीर पेश की। हेमंत दवे जिनकी ख्याति गुजरात के इतिहास लेखन और संस्कृति के अध्ययन में है, का तर्क था कि बंबई प्रांत में 19वीं सदी में आत्मचिंतन एवं आधुनिकता पूरी तरह ब्रिटिश प्रभाव के कारण नहीं था। प्रणामी एवं स्वामी नारायण संप्रदाय जैसे धार्मिक पंथों द्वारा नई अंग्रेज़ी शिक्षा लाने से पहले ही समाज में उपयोगितावादी सुधार किया जा चुका था।

उस समय का बंबई प्रांत जिसे अब महाराष्ट्र कहा जाता है, में सिंध और कोंकण तथा कुछ भाग गुजरात का था, एक सत्र इन भाषाओं को समर्पित था। इस सत्र की अध्यक्षता कोंकणी भाषा के लब्धप्रतिष्ठ लेखक दामोदर मावजो ने की। उन्होंने पुर्तगाली औपनिवेशिक संदर्भ में कोंकणी साहित्य के बारे में बात की। मराठी और सिंधी साहित्यिक संस्कृति के बारे में मराठी आलोचक सुश्री पुष्पा राजापुरे तथा सुश्री नंदिता भवानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। बहुभाषाविद मुरली रंगनाथन ने तत्कालीन बॉम्बे के गुजराती, मराठी, उर्दू एवं फ़ारसी के प्रिंट संस्कृति के बारे में बात की।

गुजराती काव्यकार, गायक श्री अमर भट ने 19 वीं सदी के कुछ श्रेष्ठ गुजराती गीतों को प्रस्तुत किया। द्वितीय प्रस्तुति युवा पारसी आर्किटेक्ट श्री कैवान मेहता की थी जिन्होंने स्लाइड शो के द्वारा उन्नीसवीं सदी के बॉम्बे को प्रस्तुत किया जिसे दर्शकों द्वारा सराहा गया।

कार्यक्रम में स्थानीय लेखक, कवि, छात्र तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे।

पंजाबी भाषा, साहित्य अत सभियाचार दे संमुख चुनोतियाँ

28-29 अप्रैल 2016, बादल

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं दशमेश गर्ल्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन बादल के संयुक्त तत्वावधान में 'पंजाबी भाषा, साहित्य अत सभियाचार दे संमुख चुनोतियाँ' विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 28-29 अप्रैल 2016 को सेमिनार हॉल, दशमेश गर्ल्स कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन साहित्य अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री गुरदयाल सिंह द्वारा किया गया। उन्होंने कहा कि भाषा और साहित्य हमारी ज़िंदगी से बहुत क़रीब से जुड़े हैं। साहित्य हमारे जीवन का दर्पण है और हमें भाषा का पूरा ज्ञान होना चाहिए तथा पंजाबी लोगों को पंजाबी भाषा को मज़बूत करने का प्रयास करना चाहिए। साहित्य अकादेमी के पंजाबी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रवेल सिंह ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि हमारी सरकारों की ग़लत नीतियों और अप्रत्याशित इंजीनियरिंग कॉलेजों की बाढ़ के कारण भाषा और सामाजिक विज्ञान को महत्त्व नहीं दिया जाता। वर्तमान शिक्षा व्यवस्था में हम अच्छे इंसान पैदा नहीं कर रहे हैं बल्कि धन अर्जित करने के लिए रोबोट पैदा कर रहे हैं। इस संगोष्ठी द्वारा इस ख़तरे को दूर करने का यह प्रयास है। डॉ. सुरजीत जी ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि हम अपने जीवन में अंग्रेज़ी भाषा को बहुत महत्त्व दे रहे हैं तथा अमीर और ग़रीब के बीच दिन प्रतिदिन अंतर बढ़ता जा रहा है जिसकी परिणति भारतीय भाषाओं के परित्याग में हुई है। संगोष्ठी के मुख्य अतिथि पंजाब सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री सरदार सुरजीत सिंह राखरा थे।

उन्होंने अपने वक्तव्य में कहा कि पंजाबी भाषा को कोई ख़तरा नहीं है। पंजाबी भाषा दिन-प्रतिदिन तरक़्क़ी कर रही है तथा पंजाबी भाषा अपनी घरेलू सीमाओं की परिधि से बाहर निकल चुकी है। डॉ. दीपक मनमोहन सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन व्यक्तियों की प्रशंसा की जो अपने क्षेत्र में निपुण हैं और पंजाबी साहित्य में बड़ा योगदान दिया है। प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. दीपक मनमोहन सिंह ने की। इस सत्र में डॉ. बलदेव सिंह, डॉ. गुरप्रीत सिंह बहल एवं डॉ. परमजीत सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता जसविंदर सिंह ने की तथा डॉ. रवि रवींद्र, प्रो. बरिंदर कौर, डॉ. कृपाल कज़ाक एवं डॉ. तरसेम शर्मा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। संगोष्ठी के दूसरे दिन हरभजन सिंह भाटिया ने प्रथम सत्र की अध्यक्षता की तथा सुखदेव सिंह सिरसा, सतनाम सिंह जस्सल, रमीन्द्र कौर एवं प्रदीप कौर ने आलेख प्रस्तुत किए। समापन सत्र की अध्यक्षता एस. एस.पी. बरनाला ने की और अपने वक्तव्य में भाषा, साहित्य और सभ्यता के ज्ञान की महत्ता को रेखांकित किया। उन्होंने अपने पुलिस प्रशासन के अनुभवों को भी साझा किया। प्रो. ओंकार सिंह ने संगोष्ठी की रिपोर्ट प्रस्तुत की।

उत्तर-पूर्व तथा पूर्वी लेखक सम्मिलन

30 अप्रैल एवं 01 मई 2016, बर्दवान

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा कृतिबास तथा AIINAA के सहयोग से उत्तर-पूर्व तथा पूर्वी लेखक सम्मिलन का आयोजन 30 अप्रैल - 01 मई 2016 को टाउन हॉल बर्दवान में किया गया। क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों तथा अतिथियों का स्वागत करते हुए बहुभाषी कार्यक्रमों की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। अपने आरंभिक वक्तव्य में श्री अंशुमन कर ने इस प्रकार के आयोजनों की महत्ता को रेखांकित किया। कृतिबास की संपादक सुश्री स्वाती गंगोपाध्याय ने अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए इस आयोजन के प्रति हर्ष का अनुभव किया। डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि उत्तर-पूर्व और पूर्वी राज्यों के अपने ऐतिहासिक धरोहर हैं किंतु सभी किसी-न-किसी प्रकार से एक-दूसरे से जुड़े हुए हैं और यह भी सच है कि कभी-कभी हम भूल जाते हैं कि ये एक दूसरे से अलग हैं। AIINAA के निदेशक डॉ. देवेश ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

पहला सत्र दो भागों में विभाजित था तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने की। सर्वश्री देवभूषण बोरा, रणजीत दास, फूकन च. बसुमतारी, नारम विद्यासागर सिन्हा, प्रकाश हाजखिम तथा पीतांबर तरियांद ने भाग लिया तथा अपनी कविताओं एवं कहानियों का पाठ किया। प्रथम दिन सायं को AIINAA समूह द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। दूसरा सत्र कहानी पाठ का सत्र था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री जनिल्क कुमार ब्रह्म ने की। श्री शिवानंद काकती (असमिया), कुमार अजीत दत्ता (बाङ्ला), बुद्धिचंद हिसनंबा (मणिपुरी) तथा इतिरानी सामंता (ओड़िया) ने अपनी कहानियों का पाठ किया। तीसरे सत्र की अध्यक्षता केमिलिन मारक ने की तथा स्व. सुनीता देवी, पिनाकी ठाकुर, रोमाकांत बसुमतारी तथा जैंद्रा जीनयम मुंडा ने अपनी कविताओं का पाठ किया। चौथे सत्र की अध्यक्षता सुश्री यशोधरा राय चौधुरी ने की तथा रूमी लस्कर बोरा, मायाङ्लंबम कदेश सिंह एवं लोकनाथ उपाध्याय ने भाग लिया तथा अपनी रचनाओं का पाठ किया।

पाँचवें एवं छठे सत्र की अध्यक्षता क्रमशः संतोष रथ तथा मृदुल दासगुप्त ने की। श्री कृष्ण बसु (बाङ्ला), वांसलन ई. धर (खासी), कृष्णमोहन ठाकुर (मैथिली), सी. लालामपुइया (मिज़ो), अजीत गोगोई (असमिया), सिरिजातो (बाङ्ला), रबीलाल टुडु (संताली) तथा धरिजाँय त्रिपुरा (कोकबरोक) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। शाम को मणिपुरी एवं ओडिसी लोकनृत्य की प्रस्तुति भी की गई।

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

परिसंवाद

पश्चिम बंगाल के बोडो की भाषायी और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि

6 मार्च 2016, अलिपुर दुआर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'पश्चिम बंगाल के बोडो की भाषायी और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि' विषयक परिसंवाद का आयोजन 6 मार्च 2016 को हेमागुरी में किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता ज्ञान सिंह असुमता, अध्यक्ष पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा ने की। पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा के महासचिव श्री सुबिन साइबा ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद का उद्घाटन श्री रमेशचंद्रसुबा के वक्तव्य से हुआ। श्री बलेंद्र मुसहरी ने बीज-वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि किसी भी समुदाय की पहचान भाषा के बिना संभव नहीं है। वास्तविकता यह है कि आज भाषा लुप्त होती जा रही है। प्रथम और दूसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के सदस्य श्री फुकनचंद्र बसुमतारी ने की। श्री अशित बरनार्जरी ने पश्चिम बंगाल के संदर्भ में बोडो लोककथाओं के पुनरुद्धार की चर्चा की। श्री महेशचंद्र नरजिनरी ने पश्चिम बंगाल के बोडो त्योहारों के बारे में संक्षेप में चर्चा की। श्री समेंद्र नरजिनरी ने पश्चिम बंगाल के बोडो भाषा के ध्वन्यात्मक एवं रूपात्मक चरित्र की चर्चा की। उन्होंने आगे कहा कि पश्चिम बंगाल में अब तक बोडो भाषा को एक बोली के रूप में मान्यता प्राप्त है। पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा इस भाषा को तुरंत स्वीकृति प्रदान की जानी चाहिए। श्री गोविंद ठाकुर ने पश्चिम बंगाल के बोडो लोकगीत और विश्वास पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने बोडो समाज की रीतियों एवं परंपराओं की भी चर्चा की। श्री विदेश सुबा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आदिवासी संस्कृति का पतन और उसका भविष्य

7 मार्च 2016, बिजनी

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बिजनी कॉलेज के सहयोग से 'आदिवासी संस्कृति का पतन और उसका भविष्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन कॉलेज परिसर में 7 मार्च 2016 को किया गया।

परिसंवाद का एक दृश्य

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बोडो साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष श्री गोविंद बसुमतारी ने की। बिजनी कॉलेज के प्राचार्य श्री बिरहास गिरि बसुमतारी ने अतिथियों का स्वागत किया। गौहाटी विश्वविद्यालय के फोकलोर विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ. अनिल बोरो मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। डॉ. बोरो एवं डॉ. फूकन बसुमतारी ने क्रमशः प्रथम एवं दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। डॉ. जिबेस्वर कोच ने 'गारो एवं राभा के लोकसंगीत : अस्तित्व एवं पतन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किया। श्री कोच ने असम की गारो एवं राभा समुदायों के संगीत के बारे में चर्चा की। उन्होंने कहा कि अन्य आदिवासी समुदायों की तरह गारो एवं राभा समुदायों की अपनी भाषा, साहित्य, संस्कृति और पहचान है। द्विभाषी भाषा के प्रयोग की वृद्धि ने धीरे-धीरे आदिवासी भाषा के महत्त्व को कम कर दिया है तथा उधार के शब्दों का मिश्रण लगभग हर वाक्य में पाए जाते हैं।

श्री सुरजीत डिकरी ने 'बोडो एवं गारो के पारंपरिक भोजन : पतन एवं भविष्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने इस बात की भी चर्चा की कि किस प्रकार दिन प्रतिदिन इन दो आदिवासियों के पारंपरिक भोजन प्रणाली में गिरावट आई है। बोडो एवं गारो दोनों समुदाय खेती पर निर्भर करते हैं। दोनों समुदायों का मुख्य भोजन चावल है। दोनों समुदाय अपना भोजन प्रकृति से प्राप्त करते हैं। श्री मोतीसन डिकरी ने 'बोडो समुदाय का पारंपरिक पोशाक और उनके पतन के कारण' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। बोडो असम में सबसे बड़ी जनजाति है।

परिसंवाद के एक सत्र का दृश्य

उनकी अपनी भाषा, पोशाक, संस्कृति और साहित्य है। बोडो समुदाय का अपना पारंपरिक पोशाक डोल्हाना, फ्शारा या शिमा (शॉल) (पुरुष तथा नारी दोनों) महिलाएँ ब्लाउज़ धारण करती हैं। विभिन्न अवसरों पर विभिन्न पोशाक धारण किए जाते हैं। सुश्री चंबावती खखलरी ने 'असम आदिवासी की बुनाई परंपरा – पतन एवं भविष्य' पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने असम में बुनाई की आदिवासी परंपरा, उनके पतन और भविष्य पर विमर्श किया। उन्होंने कहा कि असम के आदिवासी समुदाय की अपनी भाषा, साहित्य और संस्कृति है। हम यह भी कह सकते हैं कि आदिवासी संस्कृति का असमिया संस्कृति में बड़ा योगदान है। उन्होंने यह भी कहा कि यद्यपि असम के आदिवासी कम शिक्षित, ग़रीब आर्थिक पृष्ठभूमि के होने के बावजूद वे अपनी परंपरा और संस्कृति से समृद्ध हैं। हालाँकि आधुनिकता के प्रभाव में उनकी परंपरा और संस्कृति में दिन-प्रतिदिन गिरावट देखी जा रही है। डॉ. अदाराम बसुमतारी ने 'आदिवासी संस्कृति और वैश्वीकरण की सीमा (बोडो समुदाय के विशेष संदर्भ में)' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि संस्कृति क्षणिक होती है और यह बदलती रहती है। उनके अनुसार वैश्वीकरण संस्कृति के क्षणिक प्रकृति के पीछे बड़ा योगदान है। आज विज्ञान और तकनीक की दुनिया है, समस्त संसार का ज्ञान दुनिया के हर कोने और नुक्कड़ तक पहुँच सकता है। श्री रूपनाथ ओवरी के अनुसार बोडो समुदाय के बीच कुटीर उद्योगों में दिन-प्रतिदिन बदलाव को देखा जा सकता है और उन पर वैश्वीकरण का प्रभाव हो सकता है। धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

यशवंत शुक्ल एवं जसवंत ठाकर जन्मशतवार्षिकी

13 मार्च 2016, नाडियाड

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा बलवंत पारेख सेंटर वडोदरा एवं सुरजबा आर्ट्स महिला कॉलेज के सहयोग से दो विद्वानों, निबंधकार यशवंत शुक्ल एवं नाटककार जसवंत ठाकर के जन्मशतवार्षिकी पर 13 मार्च 2016 को नाडियाड में परिसंवाद का आयोजन किया गया।

श्री प्रकाश शाह ने अपने बीज वक्तव्य में यशवंत भाई के साथ बिताए अंतिम दिनों को याद करते हुए कहा कि वे उमाशंकर जोशी, भोगी लाल गाँधी, जयंती लाल, नगिनदास पारेख, मनुभाई पंचोली एवं यशवंत शुक्ल से परिचित थे। डॉ. रमण सोनी ने अपने वक्तव्य में कहा कि वह एच.के. कालेज में प्रथम वर्ष से एम.ए. तक यशवंत भाई के शिष्य रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि कक्षा में उनके व्याख्यान सुनना एक सुखद अनुभव था। तत्पश्चात् उन्होंने साहित्य में यशवंत भाई के योगदान को अंकित किया।

परिसंवाद का उत्तरार्द्ध जसवंत ठाकर एवं उनके परिवार की स्मृतियों को समर्पित था। जसवंत भाई की बेटी सुश्री नीला जयंत जोशी जो कि दर्शनशास्त्र के प्रोफ़ेसर पद से सेवानिवृत्त हुई हैं ने जसवंत भाई से जुड़ी बहुत-सी यादों को साझा करते हुए कहा कि यह हमारा सौभाग्य है कि उस समय कई विकल्प होने के बावजूद उन्होंने साहित्य को अपनाया। उन्होंने कहा कि अपनी पीएच. डी. की थिसिस के मूल्यांकन के लिए देते हुए हमेशा उन्हें अपने पिता का भय था, अपने श्वसुर से नहीं। साहित्य के बड़े दिग्गजों से वे अपने पिता के द्वारा ही मिल सकीं।

उसके पश्चात् अपने पिता जसवंत भाई को याद करने की बारी आशुतोष की थी। उन्होंने याद करते हुए कहा कि वे चाहते थे कि मैं कला संकाय में जाऊँ यद्यपि मैं पेशे से इंजीनियर था। उन्होंने जसवंत ठाकर के बारे में बताते हुए एक घटना का वर्णन किया, जब एक अभिनेता अभिनय के लिए समय पर नहीं पहुँच सका था। अंततः नाटक में अभिनय करने के लिए उन्होंने सख़्त निर्देश दिया कि आपको जैसा सिखाया गया है वैसा ही अभिनय करें। उन्होंने इस बात का आभार व्यक्त किया कि वे केवल अपने पिता की वजह से कई साहित्यिक हस्तियों से मिल सके। इस अवसर पर जसवंत पर एक विडियो शो का आयोजन भी किया गया। तत्पश्चात् श्री प्रवीण पंड्या ने जसवंत ठाकर के नाटकों के कुछ अंश प्रस्तुत किए और कहा कि वे दोनों विद्वानों के

छात्र रहे हैं। जसवंत भाई के पोते कवि एवं नाटककार श्री संमय ने 'मोती' का पाठ किया। धन्यवाद ज्ञापन के साथ परिसंवाद समाप्त हुआ।

प्राचीन साहित्य एवं इतिहास आधारित कोंकणी साहित्य

20 मार्च 2016, गोवा

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा गोवा कोंकणी एकेडमी तथा इन्स्टीट्यूट मेंजेस ब्रगंजा के सहयोग से 'प्राचीन साहित्य एवं इतिहास आधारित कोंकणी साहित्य' विषय पर इंस्टीट्यूट ब्रगंजा, पणजी में 20 मार्च 2016 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। अकादेमी की कोंकणी परामर्श मंडल के संयोजक श्री तानाजी हर्लंकर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। श्री गोपाल कृष्ण पै मुख्य अतिथि थे।

श्री उदय भेंब्रे, श्री महाबलेश्वर सैल, डॉ. जयंती नायक, श्री एस. रामकृष्ण किनी एवं मेल्विन रोड्रिग्स ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री माधव बोरकार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

बाएँ से : चंद्रमणि अधिकारी, प्रेम प्रधान, नरबहादुर राई, नवसापकोटा एवं देवेंद्र कुमार देवेश

नेपाली साहित्यिक लघुपत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका

20 मार्च 2016, शिलांग

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, शिलांग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली साहित्यिक लघु पत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका' विषयक परिसंवाद का आयोजन 20 मार्च 2016 को बाबू मणिसिंह गुरुङ सभागार, गोर्खा पाठशाला उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, शिलांग में किया गया। परिसंवाद के आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी (कार्यक्रम) डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए संक्षेप में साहित्य अकादेमी की गतिविधियों पर प्रकाश डाला। परिसंवाद के मुख्य अतिथि नेपाली के प्रतिष्ठित साहित्यकार श्री नवसापकोटा थे। उन्होंने अपने उद्घाटन भाषण में समाज पर पड़ने वाले साहित्य के प्रभावों पर विमर्श करते हुए नेपाली पत्रिकाओं की भूमिका को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने अपने आरंभिक वक्तव्य में परिसंवाद की रूपरेखा स्पष्ट करते हुए कहा कि इसमें ध्यान रखा गया है कि वृहत्तर भारतीय नेपाली परिक्षेत्र से निकलने वाली सभी प्रमुख साहित्यिक पत्रिकाओं का आकलन किया जा सके। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नेपाली साहित्य परिषद्, शिलांग के सचिव प्रो. नर बहादुर राई ने की।

परिसंवाद का विचार सत्र श्री विक्रमवीर थापा की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें श्री सचिन राई (भारतीय नेपाली साहित्य के विकास

बाएँ से : माधव बोरकर, गोपालकृष्ण पै, तानाजी हर्लंकर एवं संजय हर्मलकर

में 'दियालो' पत्रिका की भूमिका), श्री टेकनारायण उपाध्याय (भारतीय नेपाली समाज के सरोकार और नेपाली की साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ), श्री कृष्ण प्रधान (भारतीय नेपाली साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ : एक विहंगावलोकन) और श्रीमती लक्ष्मी मीनू (पूर्वोत्तर के संदर्भ में नेपाली की साहित्यिक लघु पत्रिकाएँ और भारतीय नेपाली समाज) ने अपने अपने नाम के साथ अंकित विषयों पर आलेख प्रस्तुत किए।

बाएँ से : दुर्गा शर्मा, लोक बहादुर बस्नेत, प्रेम प्रधान एवं देवेंद्र कुमार देवेश

स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ

27 मार्च 2016, मणिपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य परिषद्, मणिपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषयक परिसंवाद का आयोजन 27 मार्च 2016 को चारहजारे, मणिपुर में किया गया।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रतिष्ठित नेपाली विदुषी श्रीमती (डॉ.) दुर्गा शर्मा ने किया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया तथा यह बताया कि सुदूर मणिपुर में नेपाली भाषा परिक्षेत्र में पहली बार स्वतंत्र रूप से नेपाली कार्यक्रमों का आयोजन किया गया है। नेपाली भाषा परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि अकादेमी के परामर्शदाता होने के नाते उनका प्रयास रहता है कि अकादेमी भाषा के उन क्षेत्रों तक पहुँचे, जहाँ अब तक किन्हीं कारणों से नहीं पहुँच पाई है। इसके लिए उठाए जा रहे क़दमों की जानकारी भी उन्होंने दी। अपने अध्यक्षीय भाषण में परिषद् के अध्यक्ष श्री लोक बहादुर बस्नेत ने कहा कि नेपाली भाषा साहित्य के लिए मणिपुर एक ऐतिहासिक भूमि है, क्योंकि नेपाली भाषा की पहली कृति का प्रकाशन इसी धरती पर 1893 में हुआ था। सत्र संचालन डॉ. हरिकृष्ण सिवाकोटी ने किया, जबकि सत्रांत में परिषद् के सचिव श्री कीर्तिमणि खतिवड़ा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता श्री अर्जुन प्रधान ने की। इस सत्र में श्री मिलन बांतवा, श्रीमती पुष्पा शर्मा और डॉ. टंकनाथ खतिवड़ा ने क्रमशः 'स्वातंत्र्योत्तर नेपाली कथा साहित्य और उत्तर आधुनिकता', 'नारी विमर्श और स्वातंत्र्योत्तर नेपाली कथा साहित्य' तथा 'स्वातंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली कथा साहित्य और युद्ध' विषयक अपने आलेख प्रस्तुत किए।

भावना, अनुभव, अभिव्यक्ति, नैतिकता एवं सौंदर्यशास्त्र

23 अप्रैल 2016, शांतिनिकेतन

साहित्य अकादेमी द्वारा 'भावना, अनुभव, अभिव्यक्ति, नैतिकता एवं सौंदर्यशास्त्र' विषय पर विश्वभारती के भाषा भवन कांफ्रेंस रूम में 23 अप्रैल 2016 को एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। अकादेमी के सहायक संपादक शांतनु गंगोपाध्याय ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद का उद्घाटन विश्वभारती के कुलपति प्रो. स्वप्न कुमार दत्त ने किया और कहा कि एक मनुष्य के रूप में शैक्षणिक और ग़ैरशैक्षणिक जीवन शैली में नैतिकता को कैसे व्यवहार में लाते हैं। उन्होंने साहित्यिक चोरी और विशेष रूप से साहित्यिक कामों में धोखा का इलाज कैसे होना चाहिए, के बारे में बात की।

प्रो. ताप्ती मुखर्जी का आलेख 'अनुभव एवं अभिव्यक्ति : भारतीय साहित्य में जीवनी' विषय के द्वारा जीवनी को एक विधा के रूप में समझने को परिभाषित किया। उन्होंने बताया कि किस प्रकार जीवनी एक कला के रूप में भारत की विभिन्न भाषाओं के साहित्य में विद्यमान है, विशेषतः संस्कृत साहित्य में। अश्वमेघ का बुद्धचरित, वाण का हर्षचरित एवं ललित विस्तार सूत्र का उदाहरण देते हुए उन्होंने कहा कि पश्चिम में जिस तरह साहित्यिक वर्गीकरण है वैसा भारत में नहीं है। श्री रोमित रॉय का आलेख 'सौंदर्य क्षेत्र पर द्विभाषी' जर्मन-अंग्रेज़ी पर आधारित था।

डॉ. स्वाति गांगुली का आलेख 'पत्रिकाओं का संपादन, भावनाओं का संपादनः भानुसागर

पत्रावली का निर्माण' विषय पर जीवंत आलेख था जिसमें रानु अधिकारी को टैगोर द्वारा लिखे पत्रों की चर्चा की गई थी। उनका आलेख भावनात्मक और सौंदर्य की दृष्टि से टैगोर द्वारा पत्र के रूप में लिखी एक स्फूर्तिदायक यात्रा थी।

डॉ. राजलक्ष्मी घोष का आलेख 'नैतिक व्यक्तित्व का पाठ : एक अनुकरणीय मामला' विषय पर था। आलेख में इस बात का उल्लेख था कि किस प्रकार एक व्यक्ति की दूसरे व्यक्ति की प्रतिक्रिया एक मानव के रूप में दूसरे से बात करने की ज़िम्मेदारी लेने या दूसरे की उपस्थिति को भी स्वीकार करने की है।

डॉ. अंशुमन दास गुप्त ने 'दृश्य का प्रभाव : भारतीय कला कथा उत्तर कथा' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, जिसमें बताया गया था कि किस प्रकार कोई व्यक्ति कला के अंदर कथा की अंतर अनुशासनात्मक आख्यान कर सकता है। श्रीमती इप्शिता हालदर का आलेख 'मुहर्रम का निषिद्ध दर्द : पुस्तक से शरीर को प्रभावित करने के लिए' विषय पर था, जिसमें मुहर्रम के दौरान प्रचलित शोक प्रथाओं की चर्चा की गई थी। डॉ. पायल सी. मुखर्जी का आलेख 'मंटो और इस्मत चुग़ताई की कहानियों में अकथ्य का काव्य शास्त्र' विषय पर था, जिसमें चुग़ताई की 'घरवाली' और मंटो की 'खोल दो' के वैचारिक पाठ के माध्यम से प्रतिरोध की बात की गई थी। उन्होंने दैनिक जीवन और साहित्य में भावनाओं की भूमिका पर अपनी बात समाप्त की।

मैथिली साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव

24 अप्रैल 2016, पटना

साहित्य अकादेमी द्वारा चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मैथिली साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव' विषयक परिसंवाद का आयोजन 24 अप्रैल 2016 को विद्यापति भवन, पटना में किया गया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों पर संक्षेप में प्रकाश डाला। तत्पश्चात् एक मिनट का मौन रखकर हाल ही में दिवंगत हुए अकादेमी पुरस्कार प्राप्त दो प्रमुख मैथिली साहित्यकारों राजमोहन झा और सुरेश्वर झा को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। परिसंवाद का उद्घाटन चेतना समिति के अध्यक्ष श्री विजय कुमार मिश्र द्वारा किया गया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात मैथिली विद्वान और अकादेमी के भाषा सम्मान से विभूषित श्री मुनीश्वर झा ने किया। विषय प्रवर्तन करते हुए अकादेमी के मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने समाज पर वैश्वीकरण के प्रभाव का आकलन करते हुए कहा कि वैश्वीकरण के प्रभाव में भावी पीढ़ी आ रही है। साहित्य रचना का उद्देश्य इस पीढ़ी को बचाना है, इसे कुंठित होने से बचाना है। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री मुनीश्वर झा ने कहा कि वैश्वीकरण के इस समय में अपनी मातृभाषा सहित सभी भाषाओं की सुरक्षा हो, यह हम सभी का दायित्व है। सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन समिति के संयुक्त सचिव श्री रमानंद झा 'रमण' ने किया।

परिसंवाद का विचार सत्र श्री सुकांत सोम की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में डॉ. धीरेंद्रनाथ मिश्र (वैश्वीकरण का स्वरूप और सरोकार), श्री श्याम दरिहरे (वैश्वीकरण और मैथिली साहित्य) तथा श्री अशोक (मैथिली भाषा परिवेश पर वैश्वीकरण का प्रभाव) ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. मिश्र ने वैश्वीकरण के उपकरणों के उपयोग-दुरुपयोग को संदर्भित करते हुए दुरुपयोग से बचाव की अपेक्षा की। श्री दरिहरे ने भारतीय वैश्वीकरण को समग्रता में सर्वकल्याण हेतु उपयोगी बताया, किंतु आर्थिक वैश्वीकरण में इसके अभाव को रेखांकित करते हुए मैथिली साहित्य में इसका चित्रण करने वाले लेखकों को संदर्भित किया। श्री अशोक ने कहा कि वैश्वीकरण के प्रभाव में स्थानिक सौंदर्य नष्ट हो रहा है, संस्कृति और भाषा विकृत हो रही है। उन्होंने मैथिली साहित्य एवं इसके भाषिक परिवेश में हो रहे वैध-अवैध परिवर्तनों को उद्घाटित किया। सत्राध्यक्ष श्री सोम ने मैथिली पत्रकारिता के संदर्भ में वैश्वीकरण के प्रभाव पर अपनी बात रखी। कार्यक्रम का संचालन समिति के संयुक्त सचिव श्री उमेश मिश्र ने किया।

बाएँ से : श्रीमती वीणा ठाकुर, विजय कुमार मिश्र, मुनीश्वर झा, रमानंद झा 'रमण' एवं उमेश मिश्र

लेखक से भेंट

मंगल सिंह हजोवे

7 मार्च 2016, बिजनी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बिजनी कॉलेज में 7 मार्च 2016 को बोडो भाषा के प्रसिद्ध कथाकार श्री मंगल सिंह हजोवे के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री हजोवे भारतीय संविधान के आठवें अनुच्छेद में बोडो भाषा के सम्मिलित किए जाने के बाद अकादेमी द्वारा बोडो भाषा के पहले पुरस्कृत (2005) रचनाकार हैं। श्री हजोवे ने अपने बारे में संक्षेप में और अपनी रचना प्रक्रिया के बारे में विस्तार से चर्चा की। तत्पश्चात् उपस्थित श्रोताओं एवं आमंत्रित लेखक के बीच परस्पर संवाद हुआ।

कीर्ति नारायण मिश्र

24 अप्रैल 2016, पटना

साहित्य अकादेमी द्वारा चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत साहित्य अकादेमी पुरस्कार से विभूषित प्रख्यात मैथिली साहित्यकार श्री कीर्तिनारायण मिश्र के व्याख्यान का आयोजन 24 अप्रैल 2016 को विद्यापति भवन, पटना में किया गया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम की संकल्पना के बारे में बताया और श्री मिश्र का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया।

कीर्ति नारायण मिश्र

इस अवसर पर श्री कीर्तिनारायण मिश्र ने हिंदी से मैथिली लेखन की ओर प्रवृत्त होने संबंधी अपनी प्रेरणा के बारे में बताया और अपनी संपूर्ण साहित्यिक यात्रा पर संक्षिप्त प्रकाश डालते हुए परिवेश और प्रभावों की चर्चा की। उन्होंने कहा कि आज के दौर में अकवितावाद का ज़ोर है, इसलिए नई पीढ़ी के लेखकों की रचनाओं के लिए नई पीढ़ी के आलोचक भी होने चाहिए। अंत में उन्होंने सर्वश्री अशोक, कमल मोहन चुन्नू, शरदिंदु चौधरी और वैद्यनाथ विमल के प्रश्नों के उत्तर भी दिए। मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

हरप्रसाद दास

26 मार्च 2016, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा श्री हरप्रसाद दास के साथ लेखक से भेंट कार्यक्रम का आयोजन 26 मार्च 2016 को भुवनेश्वर में किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता के सहायक संपादक श्री गौतम पाल ने आमंत्रित लेखक एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कार्यक्रम के बारे में संक्षेप में बताया। साहित्य अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने आमंत्रित लेखक श्री हरप्रसाद दास के जीवन एवं रचनाकर्म के बारे में चर्चा करते हुए भारतीय साहित्य में उनके लेखकीय योगदान को रेखांकित किया। श्री हरप्रसाद दास ने कहा कि "मैं हर कविता के साथ मरता हूँ और कब क्या लिखा था उसे भूल जाता हूँ। मेरी रचनात्मकता निरंतर भूलने की यात्रा रही है और विस्मृति ही मुझे फिर से लिखने को प्रेरित करती रही है। मैं भूलता हूँ ताकि मैं याद कर सकूँ।" श्री दास ने अपनी बौद्धिक और रचनात्मक यात्रा के बारे में बात की और अपनी काव्यात्मक स्वयं की बारीकियों को साझा किया। उन्होंने अपने वक्तव्य का आरंभ एक विनम्र टिप्पणी के साथ यह कहते हुए आरंभ किया कि "एक लेखक हमेशा अनदेखा या अज्ञात होता है... और जो हमें लेखक के रूप में दिख रहा है वास्तव में वह नहीं है जो लिख रहा है।" श्री दास ने कहा कि बीसवीं सदी का छठा दशक उनकी पीढ़ी के लेखकों के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण रहा है क्योंकि इस दशक में भारतीय साहित्य में स्वयं की फिर से खोज की। श्री दास ने अपनी कुछ चुनिंदा कविताओं का पाठ भी किया। लब्धप्रतिष्ठ ओड़िया लेखक एवं कवि जैसे श्री रमाकांत रथ, डॉ. सीताकांत महापात्र, डॉ. देवी प्रसन्न पटनायक, डॉ. विभूति पटनायक एवं श्री अमरेश पटनायक कार्यक्रम में उपस्थित थे। साहित्य अकादेमी के सहायक संपादक ने धन्यवाद ज्ञापन दिया।

हरप्रसाद दास

अनुवाद कार्यशाला

गुजराती अनुवाद कार्यशाला

15-16 मार्च 2016, वलसाड

साहित्य अकादेमी की क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 15-16 मार्च 2016 को वलसाड में एक 'अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन किया गया, जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं की चुनी हुई कहानियों का गुजराती भाषा में अनुवाद किया गया। अकादेमी की गुजराती परामर्श मंडल की सदस्य प्रो. हिमांशी शेलत कार्यशाला की निदेशक थीं तथा डॉ. रमण सोनी एवं सुश्री शरीफा बिजलीवाला विशेषज्ञ के रूप में शामिल थे।

असमिया-नेपाली अनुवाद कार्यशाला

17-20 मार्च 2016, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा असमिया कहानियों के नेपाली अनुवाद की एक कार्यशाला का आयोजन आधुनिक भारतीय भाषा और साहित्य अध्ययन विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय, गुवाहाटी के संयुक्त तत्त्वावधान में 17-20 मार्च 2016 को किया गया।

कार्यशाला के निदेशक प्रो. खगेन शर्मा थे, तथा विशेषज्ञ के रूप में डॉ. दिलीप बोरा और श्री ज्ञानबहादुर छेत्री उपस्थित थे। कार्यशाला में अनुवादक के रूप में सर्वश्री चंद्रमणि उपाध्याय, रुद्र बराल, लक्ष्मण अधिकारी, खेमराज नेपाल, गदाधर शर्मा, छत्रमान सुब्बा तथा श्रीमती गीता लिंबू एवं श्रीमती गायत्री नेवाड़ शामिल थे। कार्यशाला के दौरान साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित आधुनिक असमिया छुटि गल्प (संपादक : गोविंद प्रसाद शर्मा, शैलेंद्र भराली एवं हृदयानंद गोगोई) की कहानियों का अनुवाद किया गया। 18 मार्च 2016 की शाम को अनुवादकों ने अनुवाद और कार्यशाला संबंधी अपने अनुभव बाँटे।

इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुरस्कृत असमिया उपन्यास जंगम (ले. देवेंद्र प्रसाद आचार्य, नेपाली अनु. चंद्रमणि उपाध्याय) का विमोचन भी किया गया।

अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी की अनुवाद संबंधी गतिविधियों का संक्षिप्त परिचय देते हुए अनुवाद की चुनौतियों पर अपनी बात रखी तथा सक्रिय एवं उत्साहपूर्ण सहभागिता के लिए सभी प्रतिभागियों के प्रति आभार प्रकट करते हुए सूचित किया कि इस अनुवाद कार्यशाला में अनूदित पाठ का पुस्तकाकार प्रकाशन भी अकादेमी द्वारा किया जाएगा।

कवि संधि एवं कथा संधि

कवि संधि : सतीलाल मुर्मू

30 अप्रैल 2016, दुमका

साहित्य अकादेमी द्वारा 30 अप्रैल 2016 को दुमका, झारखंड में 'कविसंधि' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत सुपरिचित संताली कवि श्री सतीलाल मुर्मू के एकल कविता-पाठ का आयोजन किया गया। आरंभ में श्री गंगाधर हांसदा ने श्री मुर्मू का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए उन्हें कविता-पाठ के लिए आमंत्रित किया। श्री मुर्मू ने 'मानमी बाहा', 'सरस गंगा', 'रेता बानाम', 'सेरमा रे सांगे इपील' आदि कविताओं का पाठ किया। पठित कविताओं में संताली समाज का दुख-दर्द और अनुभूतियों को पिरोया गया था। अंत में श्री सिंगराई मुर्मू ने अकादेमी के स्थानीय कार्यक्रम संयोजक के नाते औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

कथा संधि : उषा किरण ख़ान

24 अप्रैल 2016, पटना

साहित्य अकादेमी द्वारा चेतना समिति, पटना के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कथासंधि' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत अकादेमी पुरस्कार प्राप्त प्रख्यात मैथिली कथालेखिका पद्मश्री उषा किरण ख़ान के एकल कहानी-पाठ का आयोजन 24 अप्रैल 2016 को विद्यापति भवन, पटना में किया गया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत करते हुए कार्यक्रम की संकल्पना के बारे में बताया और उषा किरण ख़ान का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर श्रीमती उषा किरण ख़ान ने अपनी कहानी 'ओई गाम में' का पाठ किया। इस कहानी के बहाने उन्होंने मिथिलांचल क्षेत्र, ख़ासकर कोसी की सामाजिक दशा-दिशा का चित्रण किया है। अंत में चेतना समिति के उपाध्यक्ष श्री विवेकानंद ठाकुर ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

श्रीमती उषा किरण ख़ान

विश्व पुस्तक दिवस

23 अप्रैल 2016, बेंगळूरु

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु ने कर्नाटक पब्लिशर्स एसोसिएशन एवं बेंगळूरु एंड कर्नाटक वीमेन राइटर्स एसोसिएशन के सहयोग से विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन 23 अप्रैल 2016 को अकादेमी परिसर में किया। क्षेत्रीय सचिव श्री एस.पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया और विश्व पुस्तक दिवस की विशिष्टता के बारे में संक्षेप में बात की और अकादेमी के द्वारा युवा पीढ़ी के बीच पढ़ने की आदतों को बढ़ावा देने के प्रयासों का उल्लेख किया। कर्नाटक पब्लिशर्स एसोसिएशन के मुख्य सचिव श्री प्रकाश कंबायल्ली ने आरंभिक वक्तव्य दिया। साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने साहित्य मंच की अध्यक्षती की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. बालसुब्रह्मण्यम ने कहा कि मास मीडिया में विश्व पुस्तक दिवस के बारे में किताबें, ज्ञान का संवर्द्धन एवं विश्व पुस्तक दिवस की जागरूकता के लिए एक विशेष अभियान चलाना चाहिए। प्रसिद्ध कन्नड कवि डॉ. एच.एस. वेंकटेश ने 'बच्चों में पढ़ने की आदत पैदा करना' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। वरिष्ठ स्वतंत्रता सेनानी एवं कन्नड लेखक/ प्रकाशक श्री एच.एस. दोरस्वामी, कन्नड वीमन राइटर एवं पब्लिशर श्रीमती हेमा पट्टन शेट्टी एवं प्रसिद्ध डॉक्टर एवं लेखिका, अध्यक्ष कर्नाटक राइटर्स एसोसिएशन बेंगळूरु डॉ. वसुंधरा भूपति ने भी कार्यक्रम में भाग लिया। कर्नाटक वीमेन राइटर्स एसोसिएशन की श्रीमती वनमाला अचार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर पुस्तकों का अवलोकन करते प्रतिभागी

बाएँ से : चिन्मय गुहा, शिरशेन्दु मुखोपाध्याय एवं उज्जवल कुमार मजुमदार

23 अप्रैल 2016, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 23 अप्रैल 2016 को अकादेमी परिसर में विश्व पुस्तक दिवस का आयोजन किया गया। प्रसिद्ध बाङ्ला लेखक श्री शिरशेन्दु मुखोपाध्याय ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा प्रसिद्ध विद्वान प्रो. चिन्मय गुहा एवं प्रो. उज्ज्वल कुमार मजुमदार ने व्याख्यान दिया। प्रो. गुहा ने 23 अप्रैल के महत्त्व के बारे में बात की कि इस तारीख़ को दुनिया के महानतम कवि एवं नाटककार विलियम शेक्सपीयर का जन्म दिन होता है। प्रो. मजुमदार ने अपने जीवन पर पुस्तक के प्रभाव के बारे में बात की। प्रो. मुखोपाध्याय ने पढ़ने के कई प्लेटफ़ॉर्म उपलब्ध होने के बावजूद पाठकों

की पढ़ने की रुचि में गिरावट की बात की तथा अकादेमी के प्रति इस प्रकार के आयोजन के लिए आभार प्रकट किया।

23 अप्रैल 2016, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा विश्व पुस्तक दिवस के अवसर पर 'साहित्य मंच' का आयोजन अकादेमी के सभागार में 23 अप्रैल 2016 को किया गया। प्रसिद्ध मराठी लेखक एवं आलोचक श्री रंगनाथ पठारे को समकालीन पठन संस्कृति पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया था।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने

रंगनाथ पठारे

आमंत्रित लेखक तथा अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की साहित्यिक गतिविधियों से अवगत कराया। श्री पठारे ने अपने व्याख्यान में और अधिक पुस्तकों के प्रकाशन पर बल दिया जिससे कि पाठक उनकी तरफ़ आकर्षित हो सकें। उन्होंने इस बात को रेखांकित किया कि एक अच्छे पाठक को पहले अच्छा श्रोता होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आज की युवा पीढ़ी पाश्चात्य संस्कृति तथा आधुनिक तकनीक एवं सोशल मीडिया को अपना रही है। उन्होंने पढ़ने से संबंधित अपने कई अनुभवों को साझा किया। कार्यक्रम का समापन क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

विविध कार्यक्रम

साहित्य मंच

9 मार्च 2016, शिवसागर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा गरगाँव कॉलेज के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत असमिया व्यंग्य साहित्य की परंपरा समकालीन संदर्भ में विषयक कार्यक्रम का आयोजन 9 मार्च 2016 को कॉलेज परिसर में किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन डॉ. दुर्लव बरगोहाईं ने किया। गरगाँव कॉलेज के प्राचार्य डॉ. पी. डी. गोगोई ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डॉ. कर्बी डेका हज़ारिका ने की। श्री पुण्य सइकिया मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। सभी प्रतिभागी इस बात पर सहमत थे कि असमिया व्यंग्य साहित्य उतना ही पुराना है जितनी पौराणिक कथाएँ। सुश्री अरुंधति महंता ने दूसरे सत्र की अध्यक्षता की। सर्वश्री बिकेश बरुआ, दुर्लव बरगोहाईं एवं पुण्य सइकिया ने इस सत्र में अपने आलेख प्रस्तुत किए।

साहित्य मंच

13 मार्च 2016, दुलियाजान

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा दुलियाजान के रोटरी क्लब के सहयोग से विज्ञान एवं साहित्य विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन 13 मार्च 2016 को रोटरी कम्यूनिटी सेंटर दुलियाजान में किया गया। रोटरी क्लब की डॉ. (श्रीमती) आनंदिता दास ने प्रतिभागियों का परिचय कराया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री पंकज गोस्वामी ने की। अकादेमी की असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कर्बी डेका हज़ारिका ने प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी की उपलब्धियों को रेखांकित किया। श्रीमंत शंकरदेव विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डोका ने अपने उदाहरणों के द्वारा विज्ञान एवं साहित्य के रिश्तों को रेखांकित किया। श्री त्रिदेव हज़ारिका ने साहित्य और विज्ञान के बीच संबंधों के विभिन्न पहलुओं को रेखांकित किया तथा प्राचीन हिंदू और प्राचीन मध्ययुगीन भारतीय साहित्य में ब्रह्मांचु के विवरण के उपस्थिति के सकारात्मक विज्ञान के बारे में भी चर्चा की। डिब्रूगढ़ यूनिवर्सिटी के कुलपति डॉ. अलक कुमार बरगोहाईं ने अपने वक्तव्य में आधुनिक सभ्यता में विज्ञान और दर्शन के संबंधों की चर्चा की। उन्होंने साहित्य में इसके अलावा तत्त्वमीमांसा में विज्ञान, पौराणिक कथाओं की उपस्थिति का भी विश्लेषण किया। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल के सलाहकार सत्यकाम बरठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

राजभाषा मंच : लघुकथा पाठ

15 मार्च 2016, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 'राजभाषा मंच' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत लघुकथा पाठ कार्यक्रम का आयोजन 15 मार्च 2016 को अकादेमी सभाकक्ष, नई दिल्ली में किया गया। अकादेमी द्वारा हिंदी लघुकथाओं के पाठ का प्रथम आयोजन होने के नाते लघुकथाकारों में ख़ासा उत्साह देखने को

बाएँ से : सुकेश साहनी, बलराम अग्रवाल, मधुदीप एवं अशोक भाटिया

मिला। इस आयोजन में सर्वश्री मधुदीप, बलराम अग्रवाल, अशोक भाटिया और सुकेश साहनी ने अपनी लघुकथाओं का पाठ किया। विविध विषयों पर केंद्रित अपने समय और समाज की धड़कनों को संजोई लघुकथाओं को श्रोताओं की पर्याप्त सराहना मिली। हरेक लघुकथा में कथातत्त्व की ऐसी उपस्थिति थी, जो श्रोताओं के लिए रुचिकर थी। प्रस्तुत लघुकथाओं में सामाजिक एवं राजनीतिक विसंगतियों की सटीक अभिव्यक्ति की गई थी। पाठ के अंत में पठित लघुकथाओं पर रामकुमार आत्रेय, रामेश्वर कांबोज हिमांशु, सुभाष नीरव, राजकुमार गौतम और शेरजंग गर्ग ने अपनी संक्षिप्त टिप्पणियाँ भी कीं। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी (कार्यक्रम) डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

मिज़ो काव्योत्सव

15-16 मार्च 2016, एज़ाल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 15-16 मार्च 2016 को युवा मिज़ो कवियों के साथ 'मिज़ो काव्योत्सव' का आयोजन मिज़ोरम यूनिवर्सिटी में किया गया। काव्योत्सव में मिज़ोरम यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. आर. लालथालुआंगा के साथ साहित्य अकादेमी के NECOL परामर्श मंडल के सदस्य प्रो. मार्गेट जमाँ तथा प्रो. आर. एल. तनभविया भी उपस्थित थे। काव्योत्सव का आयोजन मिज़ोरम के युवा प्रतिभाओं को पहचान दिलाने के लिए किया गया था तथा मिज़ोरम की अनसुनी आवाज़ की अप्रकाशित कृतियों को दो भाषाओं में प्रकाशित करने का आयोजन भी था। हालाँकि मिज़ो में कविता लेखन का चलन दशकों से जारी है, समकालीन युवा मिज़ो कवियों ने यूरो केंद्रित पारंपरिक गीतों ने अपने पूर्ववर्तियों द्वारा स्थापित नशे के प्रभाव से बाहर आने का साहस दिखाया।

मिज़ो काव्योत्सव का एक दृश्य

पूर्वी क्षेत्रीय भाषायी काव्य गोष्ठी

19 मार्च 2016, शिलांग

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा पूर्वी क्षेत्रीय भाषाओं की काव्यगोष्ठी 19 मार्च 2016 को सेंट एडमंड कॉलेज ऑडिटोरियम में किया गया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा NECOL साहित्य अकादेमी के सदस्य श्री सिलवानस लमारे ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। प्रसिद्ध विद्वान एवं अनुवादक श्री प्रदीप आचार्य ने बीज-वक्तव्य दिया। EFLU के निदेशक श्री कैलाशचंद्र बराक मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता की। मोंतोश चक्रवर्ती ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। साहित्य अकादेमी का प्रकाशन मधुपुर बहादुर के अंग्रेज़ी अनुवाद का लोकार्पण भी इस अवसर पर किया गया। प्रथम सत्र में प्रतीम बरुआ (असमिया), सुश्री अनुराधा महापात्र (बाङ्ला),

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

क्रिस्टिना बानियांग (अंग्रेज़ी), पंकज पराशर (मैथिली) तथा एन. नंदिनी देवी (मणिपुरी) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सत्र की अध्यक्षता डॉ. गौरहरिदास ने की। दूसरे सत्र में अलीद्राँ ब्रह्म (बोडो), जीन. एस. दखार (हिंदी एवं खासी), कर्ण बिरहा (नेपाली), शकुंतला बलियार सिंह (ओड़िया) एवं श्याम चरण टुडू (संताली) ने अपनी कविताओं का पाठ किया। इस सत्र की अध्यक्षता डॉ. एच. बिहारी सिंह ने की। श्री प्रेमानंद मुसहरी ने समापन वक्तव्य दिया।

अखिल भारतीय कवि सम्मेलन

29 अप्रैल - 4 मई 2016, उज्जैन

भारत सरकार के संस्कृति मंत्रालय के सहयोग से उज्जैन में आयोजित 'कला उत्सव' के दौरान साहित्य अकादेमी ने 10 दिवसीय अखिल भारतीय कवि-सम्मेलन एवं व्याख्यानों का आयोजन किया। गढ़कालिका, उज्जैन स्थित भव्य विक्रमादित्य मंच पर यह आयोजन 29 अप्रैल से प्रतिदिन सायं 7 बजे के बाद आयोजित हुआ।

देशभर से आए कवियों और विद्वानों ने कालिदास की कर्मभूति में कुंभ, भारतीय संस्कृतियों, नदियों के महत्त्व, पर्यावरण और भारतीय समाज में इनके महत्त्व से संबंधित व्याख्यानों तथा कविता, गीत, ग़ज़ल आदि के द्वारा अपने भाव प्रकट किए।

प्रख्यात संस्कृत विद्वान और पुरी विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. हरेकृष्ण सतपथी ने 29 अप्रैल को हुए उद्घाटन सत्र में 'कुंभ के प्रतीकार्थ' विषय पर अपने सारगर्भित विचार प्रस्तुत किए। इसके बाद हुए काव्य-पाठ में मधुमोहनी उपाध्याय, हरीश कुमार सिंह और अशोक भाटी ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। 30 अप्रैल को डॉ. महेंद्र प्रताप सिंह जो पर्यावरण विभाग, लखनऊ के उपनिदेशक थे, ने पर्यावरण शुद्धता और नदियों की संस्कृति पर अपने विचार प्रकट किए तो सौरभ गुप्ता और मधुमोहिनी उपाध्याय ने अपने गीत प्रस्तुत किए। अगले दिन इग्नू के कुलपति डॉ. नागेश्वर राव ने महाकुंभ, नदियों और भारतीय संस्कृति पर अपना व्याख्यान दिया और प्रख्यात गीतकार बुद्धिनाथ मिश्र तथा स्थानीय कवियों जगदीश सेन 'मनोज' और सूरज नागर ने अपनी कविताएँ और गीत प्रस्तुत किए। सभी कवियों के स्वरों में क्षिप्रा और महाकाल का गुणगान था। कार्यक्रम की अध्यक्षता, विक्रम विश्वविद्यालय के पूर्व विभागाध्यक्ष हरिमोहन सिंह बुधौलिया ने की।

2 मई के दिन 'पर्यावरण संरक्षण में साहित्यकारों का योगदान' विषय पर महेंद्र प्रताप सिंह का व्याख्यान हुआ और ग़ाज़ियाबाद से बी.एल.गौड़, रूड़की से पधारे योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण', दिल्ली से लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, मुंबई से प्रसिद्ध ग़ज़लकार राजेश रेड्डी और बनारस से पधारे वशिष्ठ अनूप ने अपने गीतों और ग़ज़लों से देर तक श्रोताओं का भरपूर मनोरंजन किया। कार्यक्रम का संचालन स्थानीय कवि अशोक भाटी ने किया।

3 मई को कुंभ के पौराणिक परिप्रेक्ष्य पर योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण' ने अपने विचार व्यक्त किए और बनारस के हरिराम द्विवेदी, इरा टाक (जयपुर), बुद्धिनाथ मिश्र और बी.एल. गौड़ ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत की। हरिराम द्विवेदी द्वारा गंगा पर सुनाए गीत को श्रोताओं ने काफ़ी पसंद किया।

4 मई को ग़ाज़ियाबाद के प्रख्यात गीतकार कुँवर बेचैन की अध्यक्षता में कवि-सम्मेलन संपन्न हुआ जिसमें दक्षिण क्षेत्र सांस्कृतिक केंद्र के निमंत्रण पर आए ख्याति प्राप्त कवि अशोक चक्रधर ने भी भाग लिया। अन्य कवि थे हरीराम द्विवेदी, योगेंद्रनाथ शर्मा 'अरुण', लक्ष्मीशंकर वाजपेयी, वशिष्ठ अनूप और बी.एल.गौड़। श्रोताओं की भारी भीड़ ने इस कविता समारोह का आनंद उठाया।

साहित्य अकादेमी द्वारा कविताओं, गीतों और ग़ज़लों की इतनी अच्छी प्रस्तुति का प्रतिदिन आने वाले साहित्य प्रेमियों ने तो लाभ उठाया ही साथ ही साथ इस अवसर पर साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित पुस्तक प्रदर्शनी का भी लोगों ने भरपूर फ़ायदा उठाया।

कवि सम्मेलन की लोकप्रियता देखते हुए

स्थानीय कवियों ने साहित्य अकादेमी द्वारा प्रतिवर्ष वहाँ ऐसे ही एक समारोह करने की पुरज़ोर माँग की।

नारी चेतना

8 मार्च 2016, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा अंतरराष्ट्रीय महिला दिवस पर नारी चेतना कार्यक्रम का आयोजन 8 मार्च 2016 को अकादेमी के सभागार में किया गया। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए नारी चेतना कार्यक्रम के बारे में बताया। श्री किंबहुने ने प्रतिभागियों का परिचय दिया। कोंकणी भाषा की श्रीमती जयमाला दनैत ने अपनी मूल कहानी का हिंदी अनुवाद 'बदलता समय' प्रस्तुत किया। कहानी पुरुष प्रधान समाज पर आधारित थी। गुजराती भाषा की संस्कृतिरानी देसाई ने अपनी कविताएँ 'कोई एक ज़माने में', 'पासिंग ए पिलो', 'शब्द डिबिया', 'लुका छिपी', 'कूली शब्द', शीर्षक कविताओं का पाठ किया।

मराठी की सुश्री सेसिलिया कर्वाल्हो ने अपनी मराठी कहानी का हिंदी अनुवाद 'सुवर्ण रेखा' जो कि एक सत्य घटना से प्रेरित था, प्रस्तुत किया।

अंतिम प्रस्तुति सिंधी कवयित्री सुश्री गीता बिंदरानी की सिंधी कविताओं के हिंदी अनुवाद का था। सुश्री बिंदरानी ने 'अशांति के बाद शांति', 'बालक ने ख़ूब सताया', 'अमीर के लिए सौ जश्न' आदि कविताओं के साथ कुछ ग़ज़लों का पाठ किया। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

बाएँ से : श्रीमती गीता बिंदरानी, संस्कृतिरानी देसाई, जयमाला दनैत एवं सेसिलिया कर्वाल्हो

अस्मिता व नारी चेतना कार्यक्रम के प्रतिभागी

अस्मिता व नारी चेतना

15 मार्च 2016, तिंगखाङ्

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा तिंगखाङ् कॉलेज के सहयोग से 'अस्मिता' व 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन 15 मार्च 2016 को तिंगखाङ् कॉलेज में किया गया। अस्मिता कार्यक्रम की अध्यक्षता सुश्री विनीता दत्ता ने की तथा असम की प्रसिद्ध लेखिकाओं सुश्री जुरी बोरा बोरगोहाईं, मालिनी गोस्वामी, ज्योतिरेखा हज़ारिका, मोनालिसा सइकिया, ईला बोरगोहाईं, पैमथी गोहैन ने कार्यक्रम में भाग लिया। सुश्री जुरी बोरा एवं मालिनी गोस्वामी ने अपनी कहानियों का पाठ किया। दोनों की कहानियों में असम के वर्तमान परिदृश्य एवं महिलाओं की समाज में स्थिति को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया था। दूसरे सत्र में नारी चेतना कार्यक्रम का आयोजन किया गया था। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। सुश्री ज्योतिरेखा हज़ारिका ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सुश्री मोनालिसा ने समाज निर्माण में महिलाओं के योगदान पर व्याख्यान दिया।

बाएँ सेः गोपाल च. बर्मन, स्वागतदास गुप्त, राकादास गुप्त, सुतपा भट्टाचार्य, तृष्णा बसक एवं संयुक्ता बंद्योपाध्याय

तिंगखाङ् कॉलेज की प्राचार्य सुश्री ज्योतिमाला गोहैन ने सत्र की अध्यक्षता की।

अस्मिता

25 अप्रैल 2016, कोलकाता

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन 25 अप्रैल 2016 को अकादेमी परिसर में किया गया, जिसमें चार कवयित्रियों एवं दो कथा लेखिकाओं को आमंत्रित किया गया था। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव गोपाल च. बर्मन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती रुसती सेन ने की। सुश्री स्वागत दास गुप्त, सुश्री राकादास गुप्त, सुश्री संयुक्ता बंद्योपाध्याय एवं सुश्री सुतपा भट्टाचार्य ने अपनी कविताओं का पाठ किया। सुश्री स्वाती गुहा एवं सुश्री तृष्णा बसक ने अपनी कहानियों का पाठ किया। श्रीमती रुसती सेन ने प्रस्तुत रचनाओं की सराहना करते हुए अकादेमी से अपील की कि बंगाल में महिला रचनाकारों को प्रोत्साहित करने के लिए इस प्रकार के और आयोजन किए जाने चाहिए।

आमने-सामने

31 मार्च 2016, तिरुअनंतपुरम

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बेंगळूरु द्वारा वाय. एम.सी.ए. तिरुअनंतपुरम के सहयोग से साहित्य मंच के अधीन 'आमने-सामने' कार्यक्रम का आयोजन 31 मार्च 2016 को किया गया जिसमें वरिष्ठ मलयाळम् लेखक प्रो. जॉर्ज ओनक्कूर को व्याख्यान के लिए आमंत्रित किया गया। साहित्य अकादेमी के मळयालम् परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. कायमकुलम यूनुस ने अतिथियों का स्वागत किया।

अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्ण ने अकादेमी द्वारा मलयाळम् साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों का संक्षिप्त उल्लेख किया। प्रो. जार्ज ओनक्कूर ने अपने जीवन एवं लेखन यात्रा में आने वाले पड़ावों को साझा किया, उन्होंने साहित्य के उन रुझानों के बारे में भी बात की जिन्होंने उनके लेखन को प्रभावित किया। उन्होंने केरल के उस युवा के बारे में भी बात की जो साहित्यिक गतिविधियों में सक्रियता से भाग लेता है।

इस अवसर पर सुश्री अवस्थी का उपन्यास स्वप्न नसत्रम का लोकार्पण किया गया तथा उपन्यास की प्रथम प्रति प्रो. जॉर्ज ओनक्कूर को भेंट की गई। डॉ. एजकीला बेगम, श्री बी. मुराली एवं श्री हनीफ़ा शवथर ने भी कार्यक्रम में भाग लिया और अपने विचार प्रकट किए। श्री याजी जेम्स ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आमने-सामने कार्यक्रम के प्रतिभागी

भाषांतर - अनुभव

5-6 मार्च 2016, इंफाल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 5-6 मार्च 2016 को भाषांतर-अनुभव कार्यक्रम का आयोजन मणिपुर विश्वविद्यालय के कोर्ट हॉल में किया गया जिसमें उत्तर-पूर्व एवं पूर्वी भाषाओं का कविता-पाठ एवं उनके अनुवाद को प्रस्तुत किया गया। डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। मणिपुर यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. एच. नंद कुमार शर्मा ने उद्घाटन वक्तव्य दिया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एच. बिहारी सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता जया मित्र ने की तथा श्री अमरनाथ झा (मैथिली), श्री काङ्जम राधाकुमार सिंह (मणिपुरी), श्री माधव भटराई (नेपाली) एवं श्री सेनापति प्रद्युम्न केशरी (ओड़िया) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा बाद में उनके अनुवाद प्रस्तुत किए गए। दूसरे सत्र की अध्यक्षता श्री असित मोहंती ने की तथा सुश्री अनुपमा बसुमतारी (असमिया), श्री राहुल दासगुप्ता (बाङ्ला), श्री अदरम बसुमतारी (बोडो) एवं श्री सुबोध हंसदा (संताली) ने अपनी कविताओं का पाठ किया तथा उनके अनुवाद प्रस्तुत किए। तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री गंगाधर हंसदा ने की एवं श्री उत्पल दत्त (असमिया), श्री नरेश्वर नार्जरी (बोडो) एवं श्री गोविंद च. माझी (संताली) ने अपनी कविताओं के पाठ किए और उनके अनुवाद प्रस्तुत किए। चौथे सत्र की अध्यक्षता डॉ. एच. बिहारी सिंह ने की तथा श्री शिव कुमार मिश्र (मैथिली), श्री मीतै एल. लनचेनबा मीत्री (मणिपुरी) एवं श्री डंबर मणिप्रधान (नेपाली) ने अपनी कविताओं का पाठ किया तथा उनके अनुवाद प्रस्तुत किए।

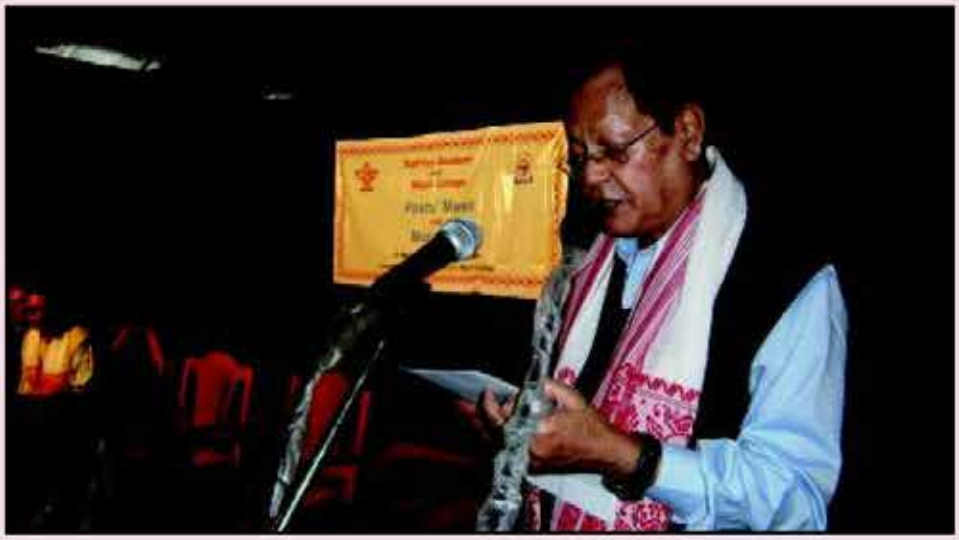

अध्यक्षीय वक्तव्य देते कॉलेज के प्राचार्य

काव्यगोष्ठी तथा मुलाक़ात

13 मार्च 2016, मजुली

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा मजुली कॉलेज के सहयोग से काव्यगोष्ठी तथा 'मुलाक़ात' कार्यक्रम का आयोजन 13 मार्च 2016 को मजुली, असम में किया गया। दोनों कार्यक्रमों की अध्यक्षता मजुली कॉलेज के प्राचार्य डॉ. देवजीत सइकिया ने की। प्रसिद्ध असमिया कवि श्री अनीसुज़्ज़माँ ने उद्घाटन वक्तव्य दिया तथा मजुली कॉलेज के प्रो. अपूर्वाज्योति हज़ारिका ने अतिथियों का स्वागत किया। क्षेत्रीय सचिव, साहित्य अकादेमी, डॉ. गोपाल च. बर्मन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'मुलाक़ात' कार्यक्रम में गीताली बोरा, कमज कुमार तांती एवं संजीव पाल डेका ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। इस कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अरिंदम बोरकोतोकी ने की।

काव्यगोष्ठी में अजीत मराली, अनीसुज़्ज़माँ, चंदन गोस्वामी, देवाज्योति बोरा, ज्ञान पुजारी एवं पराज ज्योति महंता ने अपनी कविताओं का पाठ किया जबकि नीतिमा कुमार ने सत्र की अध्यक्षता की।

अविष्कार

16 मार्च 2016, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा चिरंतन साहित्यकार दिन के सहयोग से 'अविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन 16 मार्च 2016 को कनकवाल बरुआ ऑडिटोरियम गुवाहाटी में किया गया। चिरंतन साहित्यकार दिन के सचिव श्री शंकर सइकिया ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव डॉ. गोपाल च. बर्मन ने कार्यक्रम की महत्ता पर प्रकाश डाला। सतसोरी के कार्यकारी संपादक श्री अतानु भट्टाचार्य ने अपनी कहानियों को मंच पर प्रस्तुत किया। सुश्री मीताली डे ने कहानी मंचन में साथ दिया।

बाएँ से : मिताली डे एवं अतानु भट्टाचार्य

मार्च-अप्रैल 2016 के आयोजन

5-6 मार्च 2016	इंफ़ाल	मणिपुर यनिवर्सिटी, इंफ़ाल में 'भाषांतर अनुभव' कार्यक्रम का आयोजन।
6 मार्च 2016	अलीपुरद्वार	पश्चिम बंग बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 'पश्चिम बंगाल के बोडो भाषायी एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन।
7 मार्च 2016	बिजनी	बिजनी कॉलेज, असम के सहयोग से 'आदिवासी संस्कृति का पतन एवं उसका भविष्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
7 मार्च 2016	बिजनी	बोडो के लब्धप्रतिष्ठ लेखक श्री मोंगल सिंह हज़ोवारी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
8 मार्च 2016	नई दिल्ली	अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'महिला लेखिकाओं से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
8 मार्च 2016	चेन्नै	अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
8 मार्च 2016	बेंगळूरु	अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन। इस अवसर पर इंदिरा गोस्वामी पर बनी फिल्म का प्रदर्शन।
8 मार्च 2016	मुंबई	अन्तरराष्ट्रीय महिला दिवस के अवसर पर 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन।
12 मार्च 2016	नई दिल्ली	साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर डॉ. शशि थरूर का व्याख्यान।
12 मार्च 2016		साहित्य अकादेमी के स्थापना दिवस के अवसर पर अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालों मुंबई, कोलकाता, बेंगळूरु एवं उपकार्यालय चेन्नै में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
13 मार्च 2016	नाडियाड, गुजरात	बलवंत पारेख केंद्र, वडोदरा एवं सुरजबा वुमेन्स आर्ट्स कॉलेज, नाडियाड के सहयोग से गुजरात में 'यशवंत भाई शुक्ल एवं जसवंत भाई ठाकर जन्मशतवार्षिकी' परिसंवाद का आयोजन।
13 मार्च 2016	मजुली, असम	मजुली कॉलेज, असम के सहयोग से मजुली, असम में 'कवि सम्मेलन' एवं 'मुलाक़ात' कार्यक्रमों का आयोजन।
13 मार्च 2016	दुलीजान, असम	रोटरी क्लब, दुलीजान के सहयोग से दुलीजान, असम में 'विज्ञान एवं साहित्य' विषय पर 'साहित्य मंच' का आयोजन।
13 मार्च 2016	गरगाँव, असम	गरगाँव कॉलेज, असम के सहयोग से गरगाँव, असम में 'असमिया व्यंग्य साहित्य की परंपरा एवं समकालीन संदर्भ' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
14-15 मार्च 2016	भटिंडा, पंजाब	बाबा फ़रीद कॉलेज, भटिंडा के सहयोग से भटिंडा, पंजाब में प्रसिद्ध पंजाबी लेखक हरचरण सिंह जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
15 मार्च 2016	नई दिल्ली	विवेकानंद कॉलेज, दिल्ली के सहयोग से 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें प्रसिद्ध अंग्रेज़ी लेखिका सुश्री सुकरिता पॉल ने इस्मत चुग़ताई पर अपना व्याख्यान दिया।
15 मार्च 2016	नई दिल्ली	राजभाषा मंच के अंतर्गत 'लघुकथा पाठ' कार्यक्रम का आयोजन।
15 मार्च 2016	डिब्रूगढ़, असम	तिंगखोंग कॉलेज, असम के सहयोग से डिब्रूगढ़, असम में असमिया के प्रमुख लेखिकाओं के साथ 'अस्मिता' एवं 'नारी चेतना' कार्यक्रमों का आयोजन।
16-16 मार्च 2016	श्रीनगर	जम्मू एण्ड कश्मीर एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एवं लैंग्वेजेज़ के सहयोग से कश्मीरी लेखक दीनानाथ नादिम जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन।
15-16 मार्च 2016	वल्साड	वल्साड, गुजरात में 'अनुवाद कार्यशाला' का आयोजन जिसमें क्षेत्रीय भाषाओं की लघु-कथाओं का गुजराती में अनुवाद किया गया।

16 मार्च 2016	गुवाहाटी	चिरंतन साहित्य दीन के सहयोग से असम स्टेट म्यूज़ियम, गुवाहाटी, असम में 'गोपाल कथा' पर केंद्रित 'अविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन।
17 मार्च 2016	गुवाहाटी	राज्य अकादेमियों एवं राज्य सरकारों के संस्कृति विभाग के प्रतिनिधियों के साथ बैठक।
17 मार्च 2016	नई दिल्ली	जानकी देवी कॉलेज, दिल्ली के सहयोग से अंग्रेज़ी की प्रसिद्ध लेखिका प्रो. अरुणा चक्रवर्ती के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
17 मार्च 2016	गुवाहाटी	कॉटन कॉलेज, गुवाहाटी के सहयोग से कॉलेज परिसर में 'प्रतिभा बसु जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन।
17-18 मार्च 2016	शिलॉंग	अकादेमी के आंशिक सहयोग से अंग्रेज़ी विभाग, नॉर्थ इस्टर्न हिल यूनिवर्सिटी, शिलॉंग द्वारा 'अतीत की पुनः व्याख्या : दक्षिण एशिया में सांस्कृतिक पहचान का विमर्श' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
17-20 मार्च 2016	गुवाहाटी	असमिया-नेपाली लघुकथा अनुवाद कार्यशालय का आयोजन।
19 मार्च 2016	भुवनेश्वर	अकादेमी द्वारा पुरस्कृत ओडिया उपन्यास 'अमृतर संतान' के अंग्रेज़ी अनुवाद पुस्तक का विमोचन।
19 मार्च 2016	शिलॉंग	पूर्वी क्षेत्र के कवियों के साथ 'काव्य गोष्ठी' का आयोजन।
20 मार्च 2016	गोवा	गोवा-कोंकणी एकेडमी एवं इंस्टीट्यूट मेनेजेज़ ब्रगांज़ा के सहयोग से 'प्राचीन साहित्य एवं इतिहास पर आधारित कोंकणी साहित्य' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
20 मार्च 2016	शिलॉंग	नेपाली साहित्य परिषद, शिलॉंग के सहयोग से 'नेपाली साहित्यिक लघुपत्रिकाओं की सामाजिक भूमिका' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
20 मार्च 2016	शिलॉंग	नेपाली साहित्य परिषद, शिलॉंग के सहयोग से 'नेपाली काव्य गोष्ठी' का आयोजन।
21 मार्च 2016	बटाड	बोडो साहित्य सभा के सहयोग से बरमा कॉलेज, बटाड, असम में 'बोडो लोक साहित्य एवं इसके सामाजिक तथा शैक्षिक मूल्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
26 मार्च 2016	भुवनेश्वर	लब्धप्रतिष्ठ ओडिया लेखक श्री हरप्रसाद दास के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
26-27 मार्च 2016	विशाखापत्तनम	गिरजन को-ऑपरेटिव सोसाइटी के सहयोग से ' तेलुगु भाषी क्षेत्रों में जनजातीय भाषाएँ एवं साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
27 मार्च 2016	भुवनेश्वर	भुवनेश्वर, ओडिशा में 'भुवनेश्वर बेहरा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन।
27 मार्च 2016	इंफ़ाल	नेपाली साहित्य परिषद के सहयोग से 'भारतीय नेपाली कथा साहित्य की प्रवृतियाँ' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
27 मार्च 2016	इंफ़ाल	नेपाली साहित्य परिषद के सहयोग से 'नेपाली काव्य गोष्ठी' का आयोजन।
28 मार्च 2016	नई दिल्ली	पंजाबी विभाग, दिल्ली विश्वविद्याल के सहयोग से 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें प्रख्यात पंजाबी लेखक श्री गुलज़ार सिंह संधु ने खुशवंत सिंह के जीवन एवं कृति पर अपना व्याख्यान दिया।
29-30 मार्च 2016	बेंगळूरु	'भारत की जनजातियों की सांस्कृतिक एवं साहित्यिक परंपराएँ' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन।
29-30 मार्च 2016	बेंगळूरु	संगोष्ठी के दौरान दोनों दिन शाम में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।
2-3 अप्रैल 2016	अहमदाबाद	फॉर्ब्स गुजराती सभा मुंबई, बलवंत पारेख सेंटर फ़ॉर जनरल सेमॅटिक्स, वडोदरा तथा गुजरात विद्या सभा, अहमदाबाद के संयुक्त तत्वावधान में 'उन्नीसवीं सदी के बम्बई प्रांत की साहित्यिक संस्कृति' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
3 अप्रैल 2016	अहमदाबाद	प्रख्यात अंग्रेज़ी लेखिका सुश्री इस्टर डैविड के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।

मार्च-अप्रैल 2016 के आयोजन

8 अप्रैल 2016	नई दिल्ली	प्रसिद्ध कश्मीरी कवियों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
8 अप्रैल 2016	नई दिल्ली	अंग्रेज़ी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
11 अप्रैल 2016	नई दिल्ली	प्रसिद्ध उर्दू लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
12 अप्रैल 2016	नई दिल्ली	'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें विख्यात हिंदी लेखक श्री बलदेव वंशी ने स्व. श्री महीप सिंह के जीवन एवं कृतित्व पर अपना व्याख्यान दिया।
18 अप्रैल 2016	नई दिल्ली	हिंदी के प्रसिद्ध लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन। इस अवसर पर अकादेमी द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'पाँच दशक' ('फ़ाइव डिकेड्स' का हिंदी अनुवाद) का लोकार्पण भी हुआ।
23 अप्रैल 2016	नई दिल्ली	अंतरराष्ट्रीय पुस्तक दिवस के अवसर पर अकादेमी के मुख्य कार्यालय में 'पुस्तक संस्कृति एवं पाठकों की उम्मीद' विषय पर परिचर्चा का आयोजन।
23 अप्रैल 2016	बेंगळूरु	अंतरराष्ट्रीय पुस्तक दिवस के अवसर पर कर्नाटक बुक पब्लिशर्स एसोसिएशन, बेंगळूरु के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
23 अप्रैल 2016	कोलकाता	अंतरराष्ट्रीय पुस्तक दिवस के अवसर पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
23 अप्रैल 2016	मुंबई	अंतरराष्ट्रीय पुस्तक दिवस के अवसर पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन जिसमें प्रख्यात मराठी कथाकार एवं आलोचक श्री रंगनाथ पठारे ने 'समकालीन पठन संस्कृति' पर व्याख्यान दिया।
23 अप्रैल 2016	शांतिनिकेतन	विश्वभारतीय विश्वविद्यालय के सहयोग से 'भावना, अनुभव, अभिव्यक्ति, नैतिकता एवं सौंदर्यशास्त्र' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
24 अप्रैल 2016	पटना	चेतना समिति, पटना के सहयोग से 'मैथिली साहित्य पर वैश्वीकरण का प्रभाव' विषय पर परिसंवाद का आयोजन।
24 अप्रैल 2016	पटना	चेतना समिति, पटना के सहयोग से प्रसिद्ध मैथिली कवि एवं साहित्यकार डॉ. कीर्ती नारायण मिश्र के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन।
24 अप्रैल 2016	पटना	चेतना समिति, पटना के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ मैथिली कथाकार डॉ. उषा किरण ख़ान के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
25 अप्रैल 2016	कोलकाता	बाङ्ला की प्रसिद्ध कवयित्रियों के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
28-29 अप्रैल 2016	बादल	दशमेश गर्ल्स कॉलेज, बादल, मुक्तसर, पंजाब के सहयोग से 'पंजाबी भाषा, साहित्य अत सभियाचार दे संमुख चुनौतियाँ' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन।
29 अप्रैल-8 मई 2016	उज्जैन	सिंहस्थ कुम्भ के अवसर पर उज्जैन, मध्य प्रदेश में संस्कृति मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा आयोजित 'कला उत्सव' में अकादेमी की भागीदारी। अकादेमी ने इस अवसर पर विभिन्न कार्यक्रम जैसे कवि संधि, व्याख्यान एवं नदियों पर प्रकाशित पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया।
30 अप्रैल 2016	सोपोर	कश्मीरी के प्रसिद्ध कथाकारों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन।
30 अप्रैल 2016	सोपोर	कश्मीरी के प्रसिद्ध कवयित्रियों के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन।
30 अप्रैल 2016	दुमका	दुमका, झारखंड में 'युवा संताली लेखक सम्मिलन' का आयोजन।
30 अप्रैल 2016	दुमका	प्रसिद्ध संताली लेखक श्री सतीलाल मुर्मू के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन।
30 अप्रैल-1 मई 2016	बर्दवान	कृत्तिबास एवं आईना के सहयोग से 'उत्तर एवं पूर्वी लेखक सम्मिलन' का आयोजन।

नए प्रकाशन

असमिया

अनलिमिटेड X (नवोदय)
लेः सिद्धार्थ गोस्वामी
पृ. 86, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4972-1

बाङ्ला

चलंती ठाकुर
लेः सांतनु कुमार आचार्य
अनुः शयाम सुंदर महापात्र एवं
अमित्रसूदन भट्टाचार्य
पृ. 76, रु. 70/-
ISBN : 978-81-260-4736-9

निलमस्तरानी ओ अन्यान्य गल्प
ओड़िया संस्करण के संपादकः विभूति पट्टनायक
अनुः भारती नंदी
पृ. 136, रु. 110/-
ISBN : 978-81-260-4884-7

रोड बरिश्ती झड़
लेः आनंद यादव, अनुः नीतासेन समर्थ
पृ. 364, रु. 210/-
ISBN : 978-81-260-1207-7

अंग्रेज़ी

अमृतर संतान (अ.पु. ओडिया क्लासिक)
लेः गोपीनाथ महांती
अनुः बिदुभूषण दास, प्रभात नलिनी दास एवं उपली अपराजिता
पृ. 640, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4746-8

श्रीनारायणगुरु (विनिबंध)
लेः टी. भास्करण, अनुः ए.जे. थॉमस
पृ. VII+172, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4761-1

गंगापुत्र एंड ॲदर स्टोरीज़
(अ.पु. मैथिली कहानी संग्रह)
लेः मनमोहन झा, अनुः विजय मिश्र
पृ. 72, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4753-6

हरिकांत जेठवाणी (विनिबंध)
लेः लक्ष्मण भाटिया कोमल
पृ. 116, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4909-7

इन्टिमेट ऐज़ द स्काई
(अ.पु. ओडिया कविता संग्रह)
लेः सुरेन्द्र बरिक, अनुः रबीन्द्र के. स्वाई
पृ. 70, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4758-7

खौना मिहिर्स माउंड (अ.पु. बाङ्ला उपन्यास)
लेः बानी बसु, अनुः अरुणाभ सिन्हा
पृ. 228, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4757-4

मंटो : माय लव
लेः सआदत हसन मंटो, अनुः हरीश नारंग
पृ. 236, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4752-9

मेड ऑफ़ आइस (सिंधी कविताएँ)
लेः वासदेव मोही
अनुः विनोद आसुदानी एवं राम दरयानी
पृ. 84, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4713-0

रवीन्द्रनाथ टैगोर : सलेक्टेड एसेज़ ऑन एस्थेटिक्स
सं. एवं. अनुः अमिताभ चौधुरी
पृ. 296, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4568-6

सिग्नेचर (अ.पु. तमिल काव्य संग्रह)
लेः पुवियारसु, अनुः के.एस. सुब्रमण्यन
पृ. XI+154, रु. 135/-
ISBN : 978-81-260-4875-5

क्वाट द सन सेड लॉस्ट एंड अदर पोयम्स
(अ.पु. तमिल कविता संग्रह)
अनुः के. एस. सुब्रमण्यन
पृ. 226, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4876-2

गुजराती

मालिनी
लेः रवीन्द्रनाथ टैगोर
अनुः शैलेष पारेख
पृ. 48
ISBN : 978-81-260-4685-0

हिंदी

भारतीय बाल साहित्य (आलोचना)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 618, रु. 450/-
ISBN : 978-81-260-4566-2

क्षमा देवी राव
(आधुनिक संस्कृत विद्वान पर विनिबंध)
लेः राधावल्लभ त्रिपाठी
पृ. 144, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4989-9

हम अपने आप को फिर से देखें (संवत्सर व्याख्यान - XXI)
लेः चन्द्रशेखर धर्माधिकारी
पृ. 32, रु. 30/-
ISBN : 978-81-260-4760-4

जगदीश चन्द्र माथुर (विनिबंध)
लेः सत्येन्द्र कुमार तनेजा
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4781-9

गणेश उपाध्याय (विनिबंध)
लेः उदयनाथ झा 'अशोक'
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4788-8

मुरझाए वृक्ष (अ.पु. नेपाली उपन्यास)
लेः प्रेम प्रधान
अनुः ओम नारायण गुप्त
पृ. 152, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4557-0

पापू-बापू बने महात्मा
(अ.पु. कन्नड बाल उपन्यास)
लेः बोलुवरु मुहम्मद कुन्ही
अनुः एच.एम. कुमारस्वामी
पृ. 184, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4560-4

सबद (विश्व कविता महोत्सव में प्रस्तुत भारतीय एवं विदेशी कविताओं का संकलन)
सं. मंगलेश डबराल
पृ. 188, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4689-8

स्वरोदय (अ.पु. ओड़िया कविता संग्रह)
लेः बंशीधर सारंगी
अनुः राजेन्द्र प्रसाद मिश्र
पृ. 94, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4771-0

तेरे स्पर्श स्पर्श में (अ.पु. संस्कृत कविता-संग्रह)
लेः हर्षदेव माधव
अनुः प्रवीण पण्डया
पृ. 232, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4778-9

टीका स्वयंवर (अ.पु. मराठी आलोचना)
लेः भालचन्द्र नेमाडे
अनुः सूर्यनारायण रणसुभे
पृ. 392, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4993-6

कोंकणी

भारतीय साहित्यशास्त्र
लेः जी.डी. देशपाण्डे
अनुः प्रियदर्शिनी ताडकोदकर
पृ. 692, रु. 275/-
ISBN : 978-81-260-4920-2

एक शारांशे मंथन
(अ.पु. डोगरी उपन्यास 'नंगा रुख़')
लेः ओ.पी. शर्मा सारथि
अनुः शकुंतला भरने
पृ. 76, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-4923-3

मळयालम्

चंडालिका
लेः रवीन्द्रनाथ टैगोर
अनुः देशमंगलम रामकृष्णन
रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-4853-3

रामधन्य चरिते
लेः एम. रामा
पृ. 40, रु. 55/-
ISBN : 978-81-260-4956-1

सवज्ञते वाचनंकल
सं: एम. राम
पृ. 124, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4957-X

मराठी

अजुनी बाघताली जडे
लेः रस्किन बांड, अनुः शैला स्यांकर
पृ. 200, रु. 150/-
ISBN : 81-7201-956-4 (पुनर्मुद्रण)

अपने जे पहातो (अ.पु. हिंदी कविता संग्रह)
लेः मंगलश डबराल
अनुः बलवंत जेउरकर
पृ. 72, रु. 60/-
ISBN : 81-260-2026-1

दोन ओलिचया दरम्यान
(अ.पु. हिंदी कविता संग्रह)
लेः राजेश जोशी
अनुः बलवंत जेउरकर
पृ. 108, रु. 80/-
ISBN : 81-260-2683-9

गुरु
लेः रवीन्द्रनाथ टैगोर
अनुः वीणा अलासे
पृ. 52 (निःशुल्क वितरण हेतु)
ISBN : 978-81-260-4686-7

निवणक मराठी आत्म कथा
सं: एवं सं: राम शेवळकर
पृ. 228, रु. 175/-
ISBN : 978-81-7201-464-3 (पुनर्मुद्रण)

पंगलाची सलसल
(उर्दू कहानी संग्रह 'पतझड़ की आवाज़')
लेः क़ुर्रतुल ऐन हैदर
अनुः डी.पी. जोशी
पृ. 244, रु. 175/-
ISBN : 978-81-7201-967-X (पुनर्मुद्रण)

स्वरलय (अ.पु. तेलुगु निबंध)
लेः सामला सदाशिव
अनुः लक्ष्मी नारायण बोल्ली
पृ. 164, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4919-6

स्वतंत्र्योत्तर मराठी कविता 1961-80
सं: एवं सं: टी.एस. कुलकर्णी
पृ. 244, रु. 155/-
ISBN : 81-7201-544-5 (पुनर्मुद्रण)

पंजाबी

धर्मयुद्ध (अ.पु. राजस्थानी नाटक)
लेः अर्जुनदेव चारण, अनुः बख़्शिश सिंह
पृ. 128, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4347-7

राजस्थानी

राजस्थानी भक्ति काव्य
(राजस्थानी भक्ति काव्य संग्रह)
सं: भैंवर सिंह समोर
पृ. 540, रु. 525/-
ISBN : 978-81-260-0625-0 (पुनर्मुद्रण)

संस्कृत

परिवाहः (संस्कृत काव्य संग्रह)
लेः बलराम शुक्ल
पृ. 142, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4787-1

संताली

अराह राजबाह
लेः रवीन्द्रनाथ टैगोर
अनुः बोरो बास्की
पृ. 98
ISBN : 978-81-260-4688-1

तमिल

गंधर्वन (विनिबंध)
ले. जननेशन
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4831-1

कदइती नमस्कारम्
(अ.पु. बाङ्ला उपन्यास 'शेष नमस्कार')
लेः संतोष कुमार घोष
अनुः भुवन नटराजन
पृ. 624, रु. 415/-
ISBN : 978-81-260-4982-0

ककइगालुम अमुल थंडनइयुम (अ.पु. हिन्दी कहानी संग्रह 'कव्वे और काला पानी')
लेः निर्मल वर्मा, अनुः स्वाती एच. पद्नाभन
पृ. 240, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-4981-3

कविगनार कण्दासन (विनिबंध)
लेः एम. बालसुब्रमण्यम
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1721-X (पुनर्मुद्रण)

कविमणि देसिगा विनयगम पिल्लइन कवि थैगल
संकलनः एस. श्रीकुमार
पृ. 256, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-4817-5

पुरुवम
लेः एस. एल. भैरप्पा
अनुः पवन्नन
पृ. 928, रु. 550/-
ISBN : 978-81-260-1438-5

थेरिदैदूथा कंबदासन पट्टूकल
संकलनः आर. संपत
पृ. 192, रु. 155/-
ISBN : 978-81-260-4977-6

साहित्य अकादेमी की द्वैमासिक पत्रिका
समाकालीन भारतीय साहित्य
के सदस्य बनें।
वार्षिक सदस्यता शुल्क : रु. 125/- (6 अंक)

झलकियाँ

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : ds.sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : ae.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : po.rob@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित